mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-204 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

26 जुलाई 2025 शनिवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना एवं मनेन्द्रगाढ़ से एक साथ प्रकाशित

भारत और पाकिस्तान

@ पेज 7

भारत ने ड्रोन से किया मिसाइल टेस्ट

कुरनूल, (एजेंसी)। भारत ने आंध्र प्रदेश के कुरनूल के नेशनल ओपन एरिया टेस्टिंग रेंज में शुक्रवार को ड्रोन से लॉन्च होने वाली मिसाइल की टेस्टिंग की। इस प्रिसिशन गाइडेड मिसाइल का नाम यूएलपीजीएम-वी3 है। यूएलपीजीएम-वी2 का एडवांस्ड वर्जन है। ये स्मार्ट मिसाइल ड्रोन से छोड़ी जाती है और दिन-रात, किसी भी मौसम में दुश्मन के ठिकानों को सटीकता से नष्ट कर सकती है। एक बार लॉन्च करने के बाद कभी भी टारगेट को बदला जा सकता है। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने इसका वीडियो शेयर किया है। रक्षामंत्री राजनाथा सिंह ने एक्स पर मिसाइल टेस्टिंग का वीडियो शेयर करते हुए लिखा- भारत की रक्षा क्षमताओं को बूस्ट करते हुए, डीआरडीओ ने एक्स से प्रक्षेपित सटीक निर्देशित मिसाइल सफलतापूर्वक उड़ान परीक्षण किया है। यह सफलता साबित करती है कि भारतीय उद्योग अब महत्वपूर्ण रक्षा तकनीकों को अपनाने और उनका प्रोडक्शन करने के लिए तैयार है।

मुंबई में बारिश का रेड अलर्ट, सड़कों पर पानी भरा

नई दिल्ली, (एजेंसी)। मुंबई और आसपास के जिलों में भारी बारिश जारी है। इसके चलते पुलिस ने एडवाइजरी जारी कर लोगों से जरूरत न होने पर घर से न निकलने की सलाह दी है। समुद्र तटीय इलाकों में जाने से बचने को भी कहा है। मौसम विभाग ने गुरुवार को महाराष्ट्र समेत पांच राज्यों में बारिश का रेड अलर्ट जारी किया था। वहीं, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक में ऑरेंज अलर्ट है। पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा और पूर्व बर्धमान जिले में गुरुवार को बिजली गिरने से 13 लोगों की मौत हो गई। वहीं, ओडिशा पुलिस ने गंधमर्दन पहाड़ियों पर फंसे 17 पर्यटकों का रेस्क्यू किया गया। हिमाचल प्रदेश के मंडी में सड़क धंसने से एक बस हादसे का शिकार हो गई। इसमें 7 लोगों की मौत हो गई। राज्य में अब तक कुल 147 मौतें हो चुकी हैं। वहीं, 1387 करोड़ रुपए की संपत्ति को नुकसान पहुंचा है। मौसम विभाग ने बंगाल की खाड़ी, पश्चिम बंगाल और ओडिशा के मछुआरों को समुद्र में न जाने की सलाह दी है। विभाग ने कहा कि 28 जुलाई तक इन क्षेत्रों में 55ह्मद्बद्धद्ध की रफ्तार से हवाएं चल सकती हैं।

धनखड़ के लिए फेयरवेल डिनर रखेगा विपक्ष

नई दिल्ली, (एजेंसी)। इंडिया ब्लॉक ने पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ को फेयरवेल डिनर पर आमंत्रित किया है। हालांकि, सूत्रों का कहना है कि पूर्व उपराष्ट्रपति विपक्ष न्योते पर डिनर में जाएंगे, इसकी संभावना न के बराबर है। धनखड़ ने स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए 21 जुलाई की रात में अचानक देश के 14वें उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे दिया था। हालांकि, विपपार्टियां का आरोप है कि केंद्र ने धनखड़ को इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया। 74 साल के धनखड़ का कार्यकाल 10 अगस्त 2027 तक था।

पीकेसी के साथ कुंभराज वृहद सिंचाई परियोजना से गुना जिले के खेत होंगे सिंचित-मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल, (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश नदियों का मायका है। हमारे यहां कोई ग्लेशियर नहीं हैं, लेकिन सघन वन और जलराशि उपलब्ध है। प्रदेश का कोई भी गांव, कोई भी खेत पानी से वंचित न रहे इसके लिए हमारी सरकार ने प्रदेश में तीन बड़ी नदी जोड़ो परियोजनाओं पर काम शुरू किया है। पार्वती-कालीसिंध-चंबल नदी जोड़ो परियोजना इन्हीं में से एक है। गुना जिले को पीकेसी के साथ-साथ कुंभराज वृहद सिंचाई परियोजना का भी बड़ा लाभ मिलेगा इससे यहां के गांव-गांव और खेत-खेत तक पानी पहुंचेगा। यह परियोजना गुना जिले की तस्वीर बदल देगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को गुना जिले की चाचौड़ा विधानसभा क्षेत्र के बीनागंज में पीकेसी नदी लिंक परियोजना के लिए जिलेवासियों द्वारा

आयोजित आभार सभा को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ . यादव ने करीब 5138 करोड़ रूपए की लागत वाली कुंभराज वृहद सिंचाई परियोजना का लोकार्पण किया। इस परियोजना से गुना जिले की 30 हजार हेक्टेयर से अधिक कृषि भूमि को बारहमासी सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो गई है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुना जिले के समग्र विकास के लिए कुल 175.76 करोड़ रूपए की लागत से विभिन्न श्रेणी के 604 विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमि-पूजन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंच से ग्राम बीनागंज के राजेश खंडेलवाल की बेटी के लीवर ट्रांसप्लांट के लिए 4 लाख रुपए देने की घोषणा की। बेटी के इलाज के लिए सरकार द्वारा एक लाख रूपए पहले ही दिए जा चुके हैं।

अहमदाबाद प्लेन क्रैश- मलबे में मिले 26 मानव अवशेष

अहमदाबाद (एजेंसी)। अहमदाबाद प्लेन हादसे में मारे गए 26 लोगों के अवशेष का दोबारा अंतिम संस्कार 24 जुलाई को किया गया। इनमें से 19 लोगों का अंतिम संस्कार अस्पताल प्रबंधन ने किया। 7 लोगों के अवशेष को उनके परिवार वाले फिर से घर ले गए। ये अवशेष प्लेन का मलबा हटाने के दौरान मिले थे। इनके डीएनए मैच के बाद पता चला कि इन 26 लोगों के अवशेष (बॉडी के टुकड़े) पहले ही उनके परिवार वालों को दिए जा चुके थे। सरकारी सिविल अस्पताल ने 26 परिवारों से फिर से संपर्क किया।

जम्मू-कश्मीर में एलओसी के पास लैंडमाइन ब्लास्ट

नई दिल्ली, (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में शुक्रवार को नियंत्रण रेखा के पास एक लैंडमाइन धमाका हुआ। हादसे में सेना के अग्निवीर ललित कुमार शहीद हो गए, जबकि दो अन्य जवान घायल हो गए। यह घटना कृष्णा घाटी इलाके में एरिया डॉमिनेशन पेट्रोलिंग के दौरान हुई। सेना ने बताया कि घायलों में एक जूनियर कमीशंड ऑफिसर भी शामिल हैं। दोनों को मिलिट्री अस्पताल में भर्ती कराया गया है और उनकी हालत स्थिर है। 7 जाट रेजिमेंट के अग्निवीर लालित कुमार को सलाम, जिन्होंने देश की सेवा करते हुए कृष्णा घाटी इलाके में जान की कुर्बानी दी। हम उनके परिवार के साथ इस दुख की घड़ी में खड़े हैं। जम्मू में क्रॉस फायरिंग में युवक की मौत जम्मू के निक्की टवी इलाके के 21 साल के युवक मोहम्मद परवेज की शुक्रवार को गोली लगने से मौत हो गई। यह घटना उस वक्त हुई जब पुलिस की एक टीम कथित ड्रग तस्करों का पीछा कर रही थी और इसी दौरान फायरिंग शुरू हो गई। अज्ञात लोगों ने पुलिस पर गोली चलाई, जिससे हुई क्रॉस फायरिंग में मोहम्मद परवेज को गोली लगी। उसे गंभीर हालत में सरकारी मेडिकल कॉलेज ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। परिवार का आरोप-निर्दोष था युवक घटना के बाद परवेज के परिजनों ने अस्पताल के बाहर विरोध प्रदर्शन किया। उनका कहना है कि परवेज का नशा तस्करी से कोई लेना-देना नहीं था। वह तो तवी नदी से रेत भरने का काम कर रहा था, उसी दौरान उसे गोली मार दी गई।

संसद गेट पर राहुल-प्रियंका ने एसआईआर लिखे पोस्टर फाड़े

नई दिल्ली, (एजेंसी)। बिहार वोटर वेरिफिकेशन को लेकर विपक्षी सांसदों ने गांधी प्रतिमा से लेकर मकर द्वार तक पैदल मार्च निकाला। फिर स्ढ्ढक्र लिखे पोस्टर को प्रतीकात्मक डस्टबिन में डाला। संसद के मानसून सत्र के पांचवें दिन विपक्ष ने बिहार वोटर वेरिफिकेशन मुद्दे पर संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन किया। विपक्षी सांसदों ने गांधी प्रतिमा से लेकर मकर द्वार (नए संसद भवन का एंट्री गेट) तक पैदल मार्च निकाला। इसमें राहुल गांधी, प्रियंका गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे भी शामिल हुए। मकर द्वार पहुंचने पर राहुल-प्रियंका सहित विपक्ष के सांसदों ने स्पेशल इंन्टेंसिव रिवीजन लिखे पोस्टर फाड़े। उन्हें प्रतीकात्मक डस्टबिन में डाला। साथ ही मोदी सरकार हाय-हाय के नारे लगाए। लोकसभा में भी विपक्ष ने नारेबाजी की।

सदन में करीब 20 मिनट ही कार्यवाही चल पाई। स्पीकर ओम बिरला ने सर्वदलीय बैठक बुलाई। 28 जुलाई से सदन सुचारू रूप से चलाने पर सहमति बन गई है। इसी दिन ऑपरेशन सिंदूर पर भी चर्चा होगी।राज्यसभा के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा, वे (केंद्र) गरीबों को उनके मतदान के अधिकार से वंचित करना चाहते हैं और केवल एलीट क्लास को वोट देने देना चाहते हैं...

राहुल बोले- मोदी की सिर्फ शो-बाजी, उनमें दम नहीं

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में कांग्रेस की ओबीसी सेल ने भागीदारी न्याय सम्मेलन का आयोजन किया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने सम्मेलन में पीएम नरेंद्र मोदी की जमकर आलोचना की राहुल ने भाषण के दौरान पार्टी के सदस्यों से पूछा, आपको पता है, राजनीति में सबसे बड़ी प्रॉब्लम क्या है। कार्यकर्ताओं ने जवाब दिया, पीएम मोदी। इस पर राहुल ने कहा, नरेंद्र मोदी कोई बड़ी प्रॉब्लम नहीं

हैं। मैं उनसे दो-तीन बार मिल चुका हूं। उनकी सिर्फ शो-बाजी हैं। उनमें दम नहीं है। उन्हें लोगों ने सिर पर चढ़ा रखा है। राहुल ने कांग्रेस शासित राज्यों में जाति जनगणना कराने की भी घोषणा की। उन्होंने कहा, मेरे काम में एक कमी रह गई। मुझे ओबीसी वर्ग की जिस तरह से रक्षा करनी थी, मैंने नहीं की। 10-15 साल पहले मुझे ओबीसी के मुद्दे गहराई से नहीं समझ आए थे। अगर मुझे पता होता तो मैं उसी वक्त जातिगत जनगणना करवा देता। कांग्रेस सांसद ने कहा, हम पहले जाति जनगणना नहीं करा सके। यह कांग्रेस की नहीं, मेरी गलती थी। मैं अब इसे सुधार रहा हूं। आप मेरी बहन प्रियंका से पूछिएगा कि अगर राहुल ने किसी काम के लिए मन बना लिया तो उस बात को वो छोड़ेगा या नहीं? मैं नहीं छोड़ने वाला।

राजस्थान के झालावाड़ में स्कूल बिल्डिंग गिरी,7 बच्चों की मौत, 9 की हालत गंभीर

अकलेरा (झालावाड़)। राजस्थान के झालावाड़ में सरकारी स्कूल की बिल्डिंग का हिस्सा गिरने से 7 बच्चों की मौत हो गई है, वहीं 9 गंभीर घायल हैं। मनोहरथाना ब्लॉक के पिपलोदी सरकारी स्कूल की क्लास में शुक्रवार सुबह बच्चे बैठे थे, तभी कमरे की छत ढह गई और 35 बच्चे दब गए थे। ग्रामीणों ने तत्काल मौके पर पहुंचकर मलबा हटाकर बच्चों को निकाला और अस्पताल में भर्ती कराया। मनोहरथाना हॉस्पिटल के अनुसार 5 बच्चों की मौत मौके पर ही हो गई थी, वहीं 2 ने इलाज के दौरान दम तोड़ा। हादसे को लेकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दुख जताया है। उधर, मामले में शिक्षा विभाग ने स्कूल की हेड मास्टर समेत 5 टीचर को सस्पेंड कर दिया है। वहीं घटना की जिम्मेदारी के सवाल पर शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कहा- जिम्मेदार तो मैं ही हूं। गांववालों ने बताया- वहां सुबह से बारिश हो रही थी। प्रार्थना का समय हुआ तो सभी क्लास के बच्चों को स्कूल के ग्राउंड में इकट्ठा करने की बजाय कमरे में बैठा दिया, ताकि वे भीगे नहीं।

गांधीनगर में नशे में धुत कार-चालक ने 4 को रौंदा

गांधीनगर, (एजेंसी)। गुजरात की राजधानी गांधीनगर में शुक्रवार सुबह नशे में धुत कार चालक ने 7 लोगों को रौंद दिया। हादसे में एक महिला समेत 4 राहगीरों की मौके पर ही मौत हो गई है और 3 लोगों को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। आरोपी कार चालक को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जांच में पता चला है कि कार चालक नशे में था। हादसा रांदेसन के भाईजीपुरा से सिटीप्लस जाने वाली सर्विस रोड पर हुआ। हादसे का एक सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। इसमें देखा जा सकता है कि एक टाटा सफारी कार चालक फुल स्पीड में सड़क पर चल रहे लोगों और वाहन चालकों को टक्कर मार देता है। एक स्कूटी करीब 20 से 25 मीटर तक घिसट जाती है।कार मालिक से भी हो रही है पूछताछ पुलिस मे मिली जानकारी के मुताबिक, जीजे 18 ईई 7887 रजिस्ट्रेशन नंबर वाली यह सफारी कार हितेश विनुभाई पटेल के नाम पर पंजीकृत है। लेकिन हादसे के दौरान गाड़ी कोई और शख्स चला रहा था। कार चालक के खिलाफ मामला दर्ज उसे मेडिकल जांच के लिए भेजा गया है। पुलिस हितेश से भी पूछताछ कर रही है। सुबह से ही नशे में चला रहा था कार वहीं, कार चालक की पहचान हितेश पटेल के रूप में हुई है। वह गांधीनगर जिले के पोर गांव का रहने वाला है। जांच में पता चला है कि वह सुबह से ही नशे में गाड़ी चला रहा था।

रमी विवाद पर अजित पवार बोले- कोकाटे का पक्ष सुना जाएगा

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने गुरुवार को कहा कि कृषि मंत्री माणिकराव कोकाटे के खिलाफ कार्रवाई का फैसला मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से चर्चा के बाद ही लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि कोकाटे से अगले सोमवार या मंगलवार को आमने-सामने बैठक होगी, जिसमें उनके पक्ष को सुना जाएगा और उसके बाद ही कोई निर्णय लिया जाएगा। पवार ने कहा, सभी मंत्रियों को पहले ही साफ तौर पर समझाया गया है कि उन्हें सावधानी और अनुशासन के साथ काम करना चाहिए। महाराष्ट्र विधानसभा में कोकाटे का मोबाइल पर रमी गेम खेलने का वीडियो वायरल हुआ था।

इस वीडियो के सामने आने के बाद से ही विपक्ष लगातार उनसे इस्तीफे की मांग कर रहा है।

ऑपरेशन सिंदूर पर संसद में पहली बार बोली सरकार

नई दिल्ली, (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर और सीजफायर के सवालों पर गुरुवार को सरकार ने संसद में पहली बार जवाब दिया। विदेश राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह ने राज्यसभा में लिखित जवाब में कहा- ऑपरेशन सिंदूर पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों की ओर से किए गए बर्बर आतंकी हमले के जवाब में शुरू हुआ था। कीर्ति वर्धन सिंह ने आगे कहा- ऑपरेशन सिंदूर के

तहत 7 मई को भारत ने पाकिस्तान के 9 आतंकी ठिकानों को नष्ट किया। इसके बाद पाक ने भारतीय सैन्य ठिकानों और नागरिकों को निशाना बनाने की कोशिश की, लेकिन इसका कड़ा जवाब दिया गया। पाकिस्तानी सेना को भारी नुकसान पहुंचाया। सीजफायर के सवाल पर उन्होंने कहा- 10 मई को पाकिस्तान के मिलिट्री ऑपरेशन डायरेक्टर जनरल ने भारतीय समकक्ष से संपर्क कर गोलीबारी और सैन्य गतिविधियों को रोकने का अनुरोध किया। उसी दिन बाद में संघर्ष विराम पर सहमति बनी।

हरियाणा भाजपा नेता के बेटे की हत्या

जींद (एजेंसी)। कत्ल के बाद अस्पताल पहुंचे भाजपा नेता के समर्थक, मामले की जानकारी देते पुलिस अधिकारी और इनसेट में मृतक युवक की फाइल फोटो। हरियाणा में जींद में हमलावरों ने चाकू मारकर भाजपा नेता के बेटे की हत्या कर दी। वह रात में घर लौट रहे थे, तब रास्ते में 2 कारों में आए बदमाशों ने उन पर हमला किया। मरने वाला युवक अस्पताल चलाता था। इस मामले में भाजपा नेता पिता के बयान पर दूसरे अस्पताल के संचालक और उसके साले के खिलाफ हत्या का केस दर्ज कर लिया है। पिता का कहना है कि मरीजों को लेकर हुए झगड़े में उनके बेटे को बहाने से बुलाया गया। फिर उसे गाड़ियों में लेकर घूमते रहे और रात में बदमाश बुलाकर उसकी हत्या कर दी गई।

टेकऑफ के 18 मिनट बाद एअर इंडिया फ्लाइट की इमरजेंसी-लैंडिंग

जयपुर, (एजेंसी)। जयपुर एयरपोर्ट पर शुक्रवार को एअर इंडिया फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग हुई। यह फ्लाइट जयपुर से मुंबई के लिए रवाना हुई थी। टेकऑफ के महज 18 मिनट बाद ही फ्लाइट में टेक्निकल प्रॉब्लम आ गई। इसके बाद पायलट ने जयपुर एयरपोर्ट पर फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग करवाई। एअर इंडिया की फ्लाइट एआई-612 की मिड एयर प्रॉब्लम को टेक्निकल टीम ने दुरुस्त कर लिया। इसके बाद शाम 4 बजकर 29 मिनट पर फ्लाइट मुंबई एयरपोर्ट के लिए रवाना हो गई। सूत्रों के मुताबिक टेकऑफ के बाद पायलट को फ्लाइट के कार्गो के गेट का साइन ऑन (गेट खुला होने का संकेत) मिला। हालांकि एअर इंडिया की ओर से अब तक विमान में आई तकनीकी खराबी को लेकर किसी तरह का आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है। दरअसल, एअर इंडिया की फ्लाइट एआई-612 को शुक्रवार दोपहर 1 बजकर 35 मिनट पर जयपुर से मुंबई एयरपोर्ट के लिए रवाना होना था। विमान ने अपने निर्धारित वक्त से 23 मिनट देरी से मुंबई के लिए उड़ान भरी थी।जैसे ही पायलट को कार्गो गेट साइन ऑन मिला।

संविधान से 'समाजवाद' और 'धर्म निरपेक्ष' शब्द नहीं हटाए जाएंगे

नई दिल्ली, (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने गुरुवार को राज्यसभा में बताया कि संविधान की प्रस्तावना से 'समाजवाद' और 'धर्म निरपेक्ष' शब्द हटाने की कोई मौजूदा योजना या इरादा नहीं है। ये शब्द आपातकाल के दौरान जोड़े गए थे। कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने लिखित जवाब में कहा, 'कुछ समूह इन शब्दों पर पुनर्विचार के लिए राय व्यक्त कर सकते हैं। इनसे सार्वजनिक चर्चा या माहौल बनता है, लेकिन यह सरकार का आधिकारिक रुख नहीं दर्शाता।' उन्होंने बताया कि 42वें संविधान संशोधन को चुनौती देने

वाली याचिकाएं सुप्रीम कोर्ट में नवंबर 2024 में खारिज हो चुकी हैं। बता दें कि आपातकाल के 50 साल होने पर आरएसएस के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने यह मुद्दा उठाया था। इसके बाद निवर्तमान उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने इसे संविधान का नासूर बताया था। दरअसल सेक्युलर और सोशलिस्ट शब्द 1976 में 42वें संशोधन के जरिए शामिल किए गए थे। इस दौरान देश में आपातकाल था। 25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल की घोषणा की थी।

मुख्यमंत्री आज करेंगे दो दिवसीय रीजनल पर्यटन कॉन्क्लेव का शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव 26 जुलाई को रीवा में आयोजित दो दिवसीय रीजनल पर्यटन कॉन्क्लेव का शुभारंभ करेंगे। कार्यक्रम कृष्णा राज कपूर ऑडिटोरियम में शाम 5 बजे आरंभ होगा। रीजनल पर्यटन कॉन्क्लेव में उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल, रीवा जिले के प्रभारी मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल मंत्री ग्रामीण विकास तथा श्रम विभाग एवं पर्यटन और संस्कृति राज्यमंत्री धर्मेन्द्र सिंह लोधी की विशिष्ट उपस्थिति रहेगी। कॉन्क्लेव में पर्यटन उद्योग से जुड़े हुए 600 से अधिक प्रतिनिधि शामिल होंगे। कॉन्क्लेव में संभाग के सभी जिलों के जनप्रतिनिधिगण तथा पर्यटन व्यवसाय से जुड़े प्रमुख व्यक्तियों की भागीदारी रहेगी। विन्ध्य क्षेत्र में प्रचुर वन संपदा, आकर्षक जलप्रपात, कई टाईगर रिजर्व, प्रसिद्ध धार्मिक स्थल और ऐतिहासिक स्थल हैं। यहाँ आसपास के बड़े शहरों से जोड़ने के लिए फोरलेन हाईवे, रेलमार्ग तथा हवाई सेवा की सुविधा उपलब्ध है। मध्यप्रदेश में आने वाले पर्यटकों की संख्या में वृद्धि करने और विन्ध्य क्षेत्र की पर्यटन क्षमताओं का पूरा दोहन करने के उद्देश्य से रीजनल पर्यटन कॉन्क्लेव का आयोजन किया जा रहा है। इस कॉन्क्लेव में प्रसिद्ध अभिनेता मुकेश तिवारी और पंचायत वेबसीरीज की अभिनेत्री सान्विका सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहेंगी। कॉन्क्लेव में पर्यटन के क्षेत्र में निवेश करने वालों को सम्मानित भी किया जाएगा।

कॉन्क्लेव में मुख्यमंत्री डॉ यादव शहडोल के टूरिस्ट फैसिलिटेशन सेंटर का वर्चुअल माध्यम से उद्घाटन करेंगे। कॉन्क्लेव में मण्डला, डिंडौरी, सिंगरौली, सीधी और सिवनी जिले में कला और शिल्प केन्द्रों की स्थापना के लिए एजेंसियों के साथ डिजिटल अनुबंध किए जाएंगे। कॉन्क्लेव में मुख्यमंत्री डॉ यादव आईआरसीटीसी पोर्टल पर पीएम पर्यटन वायुसेवा बुकिंग पोर्टल, होमस्टे ऑनलाइन बुकिंग पोर्टल का लोकार्पण करेंगे। समारोह में मेकमाईट्रिप के साथ चित्रकूट घाट में आध्यात्मिक अनुभूति परियोजना की वर्चुअल माध्यम से आधारशिला रखी जाएगी। कॉन्क्लेव में मुख्यमंत्री जी पर्यटन उद्योग के विकास के लिए विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों से संवाद करेंगे। कॉन्क्लेव में 27 जुलाई को ट्रेवल आपरेटर्स, होटल व्यवसायी तथा पर्यटन उद्योग से जुड़े विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों के बीच संवाद और निवेश पर चर्चा की जाएगी। कॉन्क्लेव में आयोजित प्रदर्शनी के माध्यम से मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थलों तथा पर्यटकों को दी जा रही सुविधाओं को प्रदर्शित किया जा रहा है।

प्राचीनतम मंदिरों और शिवालयों की पावन धरा है विन्ध्य

सनातन परंपरा में सबसे पहले भगवान शिव की प्रतिमा का शिवलिंग के रूप में शुरू हुआ देश ही नहीं विश्व के सबसे प्राचीन मंदिर शिव मंदिर ही हैं। जिन मंदिरों के निर्माण का उल्लेख इतिहास में सबसे पहले मिलता है उनमें से दो मंदिर विन्ध्य क्षेत्र में स्थित हैं। सतना जिले के बैजनाथ का शिव मंदिर और नागौद के समीप पन्ना जिले के चहुंमुख नाथ मंदिर के सामने बना पार्वती मंदिर प्राचीनतम मंदिर हैं। भगवान शिव का वास हिमालय और घनघोर वन क्षेत्रों में माना जाता है। विन्ध्य क्षेत्र भी सदैव से दुर्गम पर्वतों, नदियों, घने वनों, से आच्छादित प्रदेश रहा हैं। संभवतरू इसी कारण पूरे विन्ध्य क्षेत्र में कई प्रसिद्ध शिव मंदिर हैं। इन शिव मंदिरों से जुड़ी अनेक दंत कथाएं आज भी प्रचलित हैं। पूरा विन्ध्य प्रदेश भगवान शिव की आध्यत्मिक ऊर्जा का प्रस्फुटन केन्द्र है। विन्ध्य की धरा में प्राचीनतम शिव मंदिर आज भी भक्ति और आस्था का केन्द्र बनकर आध्यात्मिक ऊर्जा केन्द्रों के रूप में सुविख्यात हैं। विन्ध्य में भगवान शिव की विशेष कृपा दृष्टिगत होती है।

सतना जिले के नागौद कस्बे के समीप पन्ना जिले के नचने गांव में भगवान शिव की चारमुखी प्रतिमा चहुंमुखनाथ मंदिर में स्थापित है। लगभग 1200 वर्ष पूर्व का यह मंदिर अपनी बुंदेली स्थापत्य कला और अद्भुत प्रतिमा के कारण विख्यात है। इसमें एक ही पत्थर में भगवान शिव के अलग-अलग चार भागों के चार शीष दिखाई दे रहे हैं। इसके सामने ही पार्वती मंदिर है जिसमे अब प्रतिमा विद्यमान नहीं है। इसे प्राचीनतम मंदिर माना जाता है। रीवा में बघेल राजवंश के किला परिसर में स्थित भगवान महामृत्युंजय शिव मंदिर आस्था का केन्द्र है। इसका निर्माण बघेलवंश के राजा भाव सिंह ने कराया था। यह शिवलिंग भगवान शिव के सहस्त्र नेत्रों वाला है। इस प्रतिमा के बारे में विश्वास है कि भगवान महामृत्युंजय के दर्शन से अकाल मृत्यु भी टल जाती है। सावन माह में यहाँ प्रतिदिन हजारों भक्त यहाँ दर्शन करने पहुंचते हैं।

सतना जिले के बिरसिंहपुर कस्बे में भगवान शिव गैवीनाथ के रूप में विराजमान हैं। इस मंदिर के संबंध में किवदंती है कि यहाँ खण्डित शिवलिंग गैवी यादव नाम के व्यक्ति के घर में प्रकट हुए जिसके कारण इनका नाम गैवीनाथ हो गया है। इस शिवलिंग को औरंगजेब और उसके सिपाहियों ने भग्न करने का प्रयास किया, लेकिन अचानक हजारों मधुमक्खियों के हमले के कारण उन्हें भागना पड़ा। इसे भगवान गैवीनाथ का चमत्कार माना जाता है। सीधी जिले में ग्राम बढ़ौरा में भी भूमि से स्वयं प्रकट हुए चतुष्कोणीय भगवान बढ़ौरानाथ शिवलिंग है। इस शिवलिंग के बारे में मान्यता है कि इनका आकार धीरे-धीरे बढ़ रहा है। यह शिवलिंग अन्य शिवलिंगों से एकदम अलग दिखाई देता है। भगवान राम की तपोभूमि चित्रकूट में मत्स्य गजेन्द्रनाथ शिव मंदिर है। यहाँ भगवान शिव के साथ ब्राम्हा जी और विष्णु भी विराजमान हैं। इस मंदिर के बारे में किवदंती है कि इसका निर्माण स्वयं ब्राम्हा जी ने किया था और शिवलिंग की स्थापना की थी। रीवा जिले के गुढ़ कस्बे में भी नदी के किनारे भगवान शिव कष्टहरनाथ शिवलिंग के रूप में विराजमान हैं। इसमें दोपहर के समय शिवलिंग के अंदर ही एक अन्य शिवलिंग की आभा दिखाई देती है।

चाकू की नोक पर लूटपाट करने वाले 2 आरोपी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। कोलगवां पुलिस ने चाकू अड़ाकर लूटपाट करने वाले दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनमें से एक नाबालिग है। आरोपियों ने एक चोरी की वारदात करना भी स्वीकार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से नकदी, मोबाइल और सोने की बाली जब्त की है। टीआई सुदीप सोनी ने बताया कि मारुति नगर निवासी रोहित सिंह (29) 22 जुलाई की रात को बाइक से उतैली से एयरपोर्ट रोड होते हुए घर जा रहे थे। मैत्री पार्क के पास दो लोगों ने उनकी गाड़ी रुकवाई।

मारने की धमकी देकर ऑनलाइन ट्रांसफर कराए 43 हजार: आरोपियों ने चाकू दिखाकर रोहित को सुनसान गली में ले गए। वहां उन्होंने नकदी, सोने की अंगूठी, कान की बाली और मोबाइल फोन छीन लिया। इतना ही नहीं, जान से मारने की धमकी देकर 43 हजार रुपए ऑनलाइन ट्रांसफर करा लिए।

नाबालिग के साथ मिलकर लूटपाट करने का जुर्म कबूलाः आरोपियों के चंगुल से छूटकर पीड़ित रोहित ने तुरंत थाने जाकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने अपराध पंजीबद्ध कर जांच शुरू की। मुखबिर से मिली सूचना पर आरोपी निखिल चौधरी (19) को हिरासत में लिया गया। पूछताछ में आरोपी ने एक नाबालिग के साथ मिलकर लूटपाट करने का जुर्म कबूल कर लिया।

मनगवां विधानसभा क्षेत्र में जन समस्या निवारण शिविर का हुआ भव्य आयोजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। विधानसभा स्तरीय जनपद पंचायत गंगेव में जन समस्या निवारण शिविर का हुआ भव्य आयोजन जिसमें मनगवां विधानसभा क्षेत्र के कोने कोने से सैकड़ो हितग्राही शामिल होकर अपनी-अपनी समस्याओं का पंजियन कराकर ग्राउण्ड जीरो में ही निराकरण करवाया गया। इस अवसर पर आये हुए सभी हितग्राहियों के चेहरे पर प्रसन्नता देखने को मिली हैं।

मनगवां विधायक इंजी नरेंद्र प्रजापति ने मीडिया को जानकारी देते हुए बताया हैं कि यह शिविर समाज के अंतिम व्यक्ति को केन्द्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए किया गया हैं, जिसमें सभी विभाग की समस्याओं का निराकरण ग्राउण्ड जीरो पर ही कर दिया जाता हैं। मनगवां विधानसभा क्षेत्र के लोगों की समस्याओं के निराकरण के लिए हर माह जन समस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जा रहा हैं।

इस अवसर पर जनपद अध्यक्ष विकास तिवारी ने बताया कि जन समस्या निवारण शिविर के पहले शिविर में 164 आवेदन आये थें जिसमें 120 आवेदन ग्राउण्ड जीरो पर ही निराकरण हो गये थे बांकी शेष बचे आवेदनों का निराकरण एक हप्ते के अंदर कर दिया गया, जिसमें बसौली सड़क, डगरदुआ की सड़क, भौखरी की सड़क एवं गंगेव की दो सड़क को चिन्हित कर विधायक निधि से राशि प्रदान कर दी गई हैं, 30 आवेदन मकान गिरने के थे जिसमें सभी का निराकरण कर दिया गया, 9 आवेदन बृद्धा पेंशन के थे जिनका निराकरण भी ग्राउण्ड जीरो पर कर दिया गया हैं, गरीबी रेखा के 22 आवेदनों को तहसील भेज दिया गया हैं एवं राजस्व विभाग के कई प्रकरण जिसमें नाप नक्सा तरमीम आदि का निराकरण कर दिया गया हैं।

टोल कर्मी से मारपीट और तोड़फोड ओढ़की टोल प्लाजा पर फ्री में गाड़ी निकालने को लेकर हुआ विवाद

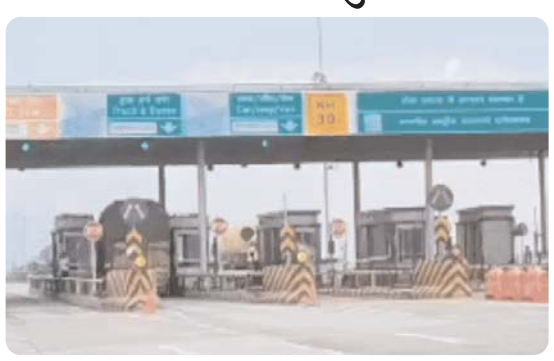

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जिले के रामपुर बघेलान थाना इलाके का ओढ़की टोल प्लाजा एक बार फिर विवादों में है। शुक्रवार दोपहर गाड़ी निकालने को लेकर हुए विवाद ने तूल पकड़ लिया। कुछ लोगों ने टोल कर्मियों के साथ मारपीट की और ऑफिस में तोड़फोड़ कर दी। घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। जानकारी के अनुसार विवाद उस समय शुरू हुआ जब कुछ लोग अपनी गाड़ी फ्री में टोल से निकालने पर अड़ गए। टोल कर्मचारियों ने मना किया तो आरोपियों ने आक्रामक रुख अपना लिया।

आरोपियों ने गाली-गलौज की और टोल प्लाजा के दफ्तर में घुसकर कर्मचारियों से मारपीट की। वहां तोड़फोड़ भी मचा दी। वाहन चालक अपने साथियों के साथ जबरदस्ती गाड़ी निकालने की कोशिश कर रहे थे। पुलिस ने मामले को संज्ञान में लेकर जांच शुरू कर दी है। फुटेज के आधार पर आरोपियों की पहचान कर कार्रवाई की जा रही है।

कुछ दिनों पहले भी हुई थी तोड़फोड़: ओढ़की टोल प्लाजा में विवाद का यह कोई पहला मामला नहीं है। स्थानीय लोगों के अनुसार टोल प्लाजा के कर्मचारी वाहन निकालने को लेकर आसपास के ग्रामीणों से अभद्रता करते हैं। इससे विवाद की स्थिति बनती है। कुछ दिन पहले भी लगभग दर्जन भर लोगों ने इस टोल प्लाजा में जमकर तोड़फोड़ की थी।

कांग्रेस विधायक पर अपने ही कर्मचारी के ऊपर प्राणघातक हमले का आरोप

पूर्व विधायक सहित भाजपा कार्यकर्ताओं ने किया थाने का घेराव, पुलिस से हुई तीखी नोंक झोंक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सेमरिया विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के विधायक अभय मिश्रा पर अपने ही कर्मचारी के साथ मारपीट के आरोप सामने आए हैं जिसके बाद विधायक के खिलाफ थाने में प्रकरण पंजीबद्ध कराने की मांग को लेकर भाजपा कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन किया है। भाजपा के विरोध प्रदर्शन में सेमरिया से पूर्व भाजपा विधायक के पी त्रिपाठी की पुलिसकर्मियों से तीखी नोंक झोंक हुई है जिसमें पूर्व विधायक कांग्रेस के वर्तमान विधायक के ऊपर मामला पंजीबद्ध कराने में जुटे रहे।

दरअसल कांग्रेस पार्टी से विधायक अभय मिश्रा के फॉर्म हाउस में अभिषेक तिवारी नाम का युवक नौकरी करता था जिसके ऊपर गुरुवार को प्राणघातक हमला हुआ है जिसके बाद पीड़ित युवक ने थाने पहुंचकर कांग्रेस विधायक अभय मिश्रा के ऊपर मारपीट का आरोप मढ़ते हुए शिकायत की है जिसपर अब मामले को तूल देते हुए सेमरिया के ही कुछ भाजपा नेताओं ने थाने का घेराव कर विधायक के खिलाफ मामला पंजीबद्ध करने की मांग करी है। भाजपा के पूर्व विधायक के पी त्रिपाठी का कहना है कि पुलिसकर्मी कांग्रेस विधायक अभय मिश्रा से मिले हुए हैं जिसकी वजह से उन्होंने झूठ की कार्यवाही दिखाने की कोशिश की है। इसके साथ ही पीड़ित युवक का आरोप है कि वह कांग्रेस के विधायक अभय मिश्रा के यहां नौकरी करता था जहां करीब 3-4 महीने की मासिक वेतन उसे नहीं मिली और जब उसने अपनी तनख्वाह की मांग की तो विधायक ने स्वयं उसके ऊपर हमला कर दिया और डंडे की बरसात से वह बुरी तरह जख्मी हो गया है जिसपर उसने विधायक के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज कराई है।

ताप्ती-गंगा एक्सप्रेस से महिला का पर्स चोरी, मोबाइल, सोने-चांदी के गहने समेत छह लाख का सामान; फोन गैंगमैन को देकर आरोपी फरार

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। रेलवे स्टेशन पर गुरुवार रात श्वेता जैन नाम की एक महिला का पर्स चोरी हो गया। श्वेता अपने पति के साथ ताप्ती गंगा एक्सप्रेस की S-2 कोच में सीट खोज रही थीं, तभी किसी अज्ञात व्यक्ति ने उनका पर्स उठा लिया। जीआरपी ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शुक्रवार दोपहर को श्वेता के पति कमल जैन और रेलवे पुलिस स्टेशन पर लगे सीसीटीवी फुटेज की जांच की। आरोपी की पहचान करने की कोशिश की जा रही है। श्वेता और कमल जैन मूल रूप से सतना के रहने वाले हैं। लेकिन फिलहाल सूरत में रहते हैं। वे कुछ जरूरी काम से सतना आए थे।

चोरी हुए सामान की कीमत छह लाख से ज्यादा: घटना के बाद श्वेता जैन सूरत लौट गईं। पीड़िता के अनुसार, पर्स में एक एंड्रॉइड मोबाइल, सोने-चांदी के गहने और अन्य कीमती सामान था। चोरी हुए सामान की कीमत छह लाख रुपए से ज्यादा बताई गई है।

सीट अरेंज करते समय अज्ञात व्यक्ति ने पर्स चुराया: गुरुवार रात करीब 10:30 बजे कमल जैन अपनी पत्नी को सतना रेलवे स्टेशन छोड़ने आए थे।

एम.बी.बी.एस. की हिन्दी माध्यम से की गई पढ़ाई से मरीजों के इलाज में सुगमता होगी : राजेन्द्र शुक्ल

मिशन मातृ भाषा, प्रोत्साहन एवं जागरूकता कार्यक्रम में शामिल हुए उप मुख्यमंत्री

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि हिन्दी माध्यम से एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई से मरीजों के इलाज में सुगमता होगी। हमारा प्रदेश हिन्दी माध्यम से चिकित्सा शिक्षा देने वाला राज्य है जहाँ इस दिशा में तेजी से कार्य किया जा रहा है। उप मुख्यमंत्री श्यामशाह चिकित्सा महाविद्यालय में मिशन मातृभाषा प्रोत्साहन एवं जागरूकता कार्यक्रम में शामिल हुए।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि हिन्दी भाषा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कार्यक्रम का आयोजन प्रशंसनीय है। हिन्दी माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा से ग्रामीण प्रतिभाओं को आगे आने का अवसर मिलेगा साथ ही उनमें आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि देश के गृह मंत्री अमित शाह जी ने प्रदेश में हिन्दी के माध्यम से चिकित्सा की शिक्षा देने का शुभारंभ किया था जो अब मूर्तरूप ले रहा है और हिन्दी माध्यम से पुस्तकों से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। शुक्ल ने शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों से अपेक्षा की कि वह एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई के उपरांत गांव में अपनी सेवा देकर पीड़ित मानवता का पुण्य लें क्योंकि भारत को समझना है तो गांव को समझना होगा। ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्रों को सुविधा संपन्न बनाया जा रहा है तथा चिकित्सकों व स्टाफ के लिये आवास सहित अन्य व्यवस्थायें भी सुनिश्चित कराई जा रही है। उन्होंने कहा कि रीवा में चिकित्सा सुविधाओं के लिये अतिरिक्त भवन, मशीनें तथा चिकित्सकों व चिकित्सकीय स्टाफ की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित कराई जा रही है ताकि मरीजों को बेहतर से बेहतर इलाज मिल सके।

इस अवसर पर डीन मेडिकल कालेज डॉ. सुनील अग्रवाल ने कहा कि हिन्दी माध्यम से की गई पढ़ाई से मातृभाषा को लोग बेहतर ढ़ंग से समझ सकेंगे व मरीजों के समझा भी सकेंगे। उन्होंने बताया कि हिन्दी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया जायेगा। कार्यक्रम में अधीक्षक डॉ. राहुल मिश्रा, चिकित्सक, विधायक प्रतिनिधि विवेक दुबे, के.के. गर्ग तथा छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे। छात्र दिव्यांश व छात्रा कुमकुम मण्डलोई ने हिन्दी माध्यम से की जाने वाली पढ़ाई की विशेषताओं को बताया।

शासकीय महाविद्यालय में किया गया वृक्षारोपण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शहीद पद्मधर सिंह शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सतना में शुक्रवार को नगर निगम और एनएसएस के तत्वाधान में वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम पर्यावरणीय जागरूकता एवं सतना को हरित व स्वच्छ बनाने की दिशा में एक प्रेरणादायक पहल रही। कार्यक्रम में महापौर योगेश ताम्रकार, स्पीकर नगर निगम राजेश चतुर्वेदी, आयुक्त नगर निगम शेर सिंह मीना, सहायक कलेक्टर अनिकेत शांडिल्य, अधीक्षण यंत्री एसके सिंह, उपयंत्री के.पी. गुप्ता, मुकेश चतुर्वेदी, आकाश कुमार, रोजल प्रताप सिंह, मनीष वर्मा, दीपक बागरी, जन भागीदारी अध्यक्ष विजय यादव, अजय सिंह पार्षद, घनश्याम सोनी, पूर्व ब्रिगेडियर देवेंद्र प्रताप सिंह, महाविद्यालय सदस्य मणिकांत महेश्वरी, महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. एससी राय, जिला संगठक डॉ. क्रांति मिश्रा सहित एनएसएस स्वयंसेवकों, एनसीसी कैडेट्स, नगर निगम के समस्त अधिकारीगण, महाविद्यालय के प्राध्यापकगण, तथा बडी संख्या में नगरवासी उपस्थित रहे और सभी ने मिलकर बढ़-चढ़कर पौधारोपण किया। कार्यक्रम के अंतर्गत सतना नगर के विभिन्न स्थलों पर अशोक, नीम, पीपल, गुलमोहर, आम, कचनार, आंवला, अमरूद आदि के सैकड़ों पौधे रोपे गए। यह कार्य न केवल पर्यावरण को संतुलित करने हेतु था, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए हरित धरोहर छोड़ने की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा।

पीएम श्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय में बिना जाति प्रमाणपत्र के कर सकेंगे आवेंदन

ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 29 जुलाई

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। पीएम श्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय चुरहट के प्राचार्य डॉ. डी के त्रिपाठी ने बताया कि सत्र 2026-2027 के लिए कक्षा छठवीं में प्रवेश परीक्षा के लिए ऑनलाइन आवेदन भरा जा रहा है। अभी तक 1066 आवेदन भरे गए हैं। इसके लिए कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज, जिला शिक्षा अधिकारी, जिला जनसंपर्क अधिकारी और सीधी जिले के समस्त अधिकारी और कर्मचारी तथा नवोदय विद्यालय के शिक्षक एवं कर्मचारियों का मार्गदर्शन एवं सहयोग रहा है। अभी तक सबसे ज्यादा 290 आवेदन कुसमी ब्लॉक से बीआरसीसी अंगिरा द्विवेदी और बीईओ और शिक्षकों के सहयोग से भरे गए हैं। उन्होंने बताया कि आवेदन भरते समय जाति प्रमाण पत्र अपलोड करना अनिवार्य था लेकिन अभी यह अनिवार्यता नहीं है। अब सभी बिना जाति प्रमाण पत्र के ही आवेदन भर सकते हैं।

प्राचार्य डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार और सीधी जिले का एक मात्र विद्यालय जहां छात्रों को सह शिक्षा और निःशुल्क आवासीय सुविधा, छात्र एवं छात्राओं को अलग-अलग छात्रावास की सुविधा, निःशुल्क भोजन सुविधा, खेलकूद, संगीत, कला, कौशल आधारित कंप्यूटर शिक्षा, स्काउटस एवं गाइडस, एन.सी.सी., सुसज्जित पुस्तकालय, आधुनिकतम गणित एवं विज्ञान की प्रयोग शालाएं, विद्वान शिक्षकों का मार्गदर्शन, परवर्जन योजना के माध्यम से व्यापक सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है। नवोदय विद्यालय का उद्देश्य है ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभाशाली बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करना है ताकि वे सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों से परे होकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकें। इसका लाभ जिले के हजारों छात्र-छात्राओं को मिल चुका है जिनमें से कुछ प्रमुख नाम एमपीपीएससी सुष्मिता गुप्ता और सोनाली गुप्ता, डॉ एस के पटेल, डॉ. राममनी, डॉ. राजेश, डॉ. एस के द्विवेदी, डॉ हरी सिंह यादव, डॉ. यू के सिंह, प्रो. बुद्धसेन, श्रीधर गुप्ता आईआईटी कानपुर, सत्येंद्र पाण्डेय बीएचयूआईटी, एस सिंह एसजीएफआईटीटी, इत्यादि हैं।

प्राचार्य ने बताया कि सीधी जिले में पांचवीं में अध्ययनरत सभी छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का यह सुनहरा अवसर है। ऑन लाइन आवेदन की अंतिम तिथि 29 जुलाई है। अब बिना जाति प्रमाण पत्र के ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

बारिश में धस गई सुरक्षा दीवार, बड़ी दुर्घटना का अंदेशा

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। शुक्रवार की दोपहर नगर पालिका क्षेत्र वार्ड क्रमांक 5 में हाऊसिंग बोर्ड कालोनी में कुछ घंटो की बारिश ने सुरक्षा दीवार को धरासाई कर दिया, गनीमत रही की हो रही वर्षा के चलते इस दौरान बच्चे उक्त दीवार से दूर थें। नही तो बड़ी दुर्घटना घटित हो सकती थी। बताया गया कि मुकेश गुप्ता पिता स्व.कमला प्रसाद गुप्ता वार्ड क्रमांक 5 नेहरू पार्क के समीप 25 जुलाई 25 की दोपहर अपने घर पर नही थें, और इस दौरान अचानक से घर के बाहर बनी सुरक्षा दीवार धसक गई और सूखा नाले की ओर हवा में लटकने लगी। उक्त माकान मालिक गुप्ता ने समाचार माध्यम से जिला प्रशासन का ध्यान आकृष्ट कर त्वरित रूप से सुरक्षा व्यवस्था एवम राहत कार्य की मांग की हैं। गुप्ता ने बताया कि यदि नगर पालिका प्रशासन द्वारा त्वरित रूप से राहत कार्य प्रारंभ नही किया गया तो सूखा नाले के समीप बने हाऊसिंग बोर्ड के अन्य घर भी सूखा नाले के पानी की चपेट में आ जायेगें और धरासाई हो जायेगें। ऐसी स्थिती में होने वाले जान एवम माल के नुकसान की भरपाई कर पाना मुश्किल हो जायेगा।

पंचतत्व में विलीन हुए शिक्षाविद पण्डित रामराज शुक्ल

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। मझौली पाड के शिक्षाविद पूर्व बी आर सी कन्या विद्यालय मझौली के सेवानिवृत्त प्रचार्य व ज्योतिष कर्मकाण्ड के प्रकाण्ड विद्वान का 24 जुलाई 25 गुरूवार की रात में अचानक ह्दय गति थमने से देहावसान हो गया। पंडित रामराज शुक्ल को उनके परिजनो ने शुक्रवार की सुबह गृह ग्राम पाड में मुखाग्नि दी। पंडित रामराज के पंचतत्व में विलीन होने की घटना से क्षेत्रवासियों में शोक की लहर व्याप्त है। पण्डित रामराज अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोडक़र गए हैं। उनकी मृत्यु से रामानंद शुक्ला सेवा निवृत्त कलेक्टर, रामावतार शुक्ल पूर्व बैंक मैनेजर, सच्चिदानंद शुक्ला, प्रमोद शुक्ल, सुधींद्र शुक्ला एडवोकेट, सुबोध शुक्ला, विवेकानंद शुक्ला, मनोज शुक्ला, नंद कुमार मिश्रा जिला अध्यक्ष पेंसनर एसोसीएसन, एड.प्रमोद कुमार मिश्रा, श्रवण शुक्ला, संजीव मिश्रा, उमेश शुक्ला, श्रवण मिश्रा, बी.के. शुक्ला, सौरभ शुक्ला सहित समस्त परिवार व इष्टजनों को गहरा आघात लगा है।

गोपद नदी में उफान, खर्रा घाट पुल डूबा

सीधी-सिंगरौली मार्ग दो घंटे बंद, हजारों ग्रामीणों की आवाजाही रुकी

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिले के आदिवासी बहुल भुईमाड़ क्षेत्र में शुक्रवार सुबह अचानक मौसम बदला। तेज बारिश के कारण सोनगढ़ क्षेत्र की गोपद नदी उफान पर आ गई। सुबह लगभग 10 बजे से नदी का जलस्तर तेजी से बढ़ने लगा। इसके कारण खर्रा घाट पुल पूरी तरह जलमग्न हो गया। यह पुल सीधी और सिंगरौली जिलों को जोड़ने वाला प्रमुख मार्ग है। यह करीब 15 हजार ग्रामीणों के लिए जीवन रेखा का काम करता है। लगातार बहते पानी के कारण पुल पर आवागमन पूरी तरह बंद हो गया। इससे दोनों ओर से स्कूली छात्र, कर्मचारी, ग्रामीण और यात्री फंस गए।

लोग मजबूरी में पुल पार करने का जोखिम उठा रहे थे, लेकिन समय रहते भुईमाड़ पुलिस मौके पर पहुंच गई। सुरक्षा के लिहाज से पुल को पूरी तरह

सील कर दिया गया।

भुईमाड़ थाना प्रभारी डीडी सिंह ने बताया कि गोपद नदी का जलस्तर काफी बढ़ चुका है। किसी भी अप्रिय घटना से बचने के लिए पुलिस बल मौके पर तैनात किया गया है।

कमिश्नर ने पर्यटन कॉन्क्लेव के संबंध में दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। कमिश्नर बीएस जामोद ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से संभाग के सभी जिलों के कलेक्टर्स से पर्यटन कॉन्क्लेव की तैयारियों की जानकारी ली। कमिश्नर ने कहा कि कलेक्टर अपने जिले के जनप्रतिनिधि तथा पर्यटन व्यवसाय से जुड़े लोगों की सूची आज ही उपलब्ध कराकर उनकी पर्यटन कॉन्क्लेव में भागीदारी सुनिश्चित करें। पर्यटन उद्योग को गति देने के लिए कॉन्क्लेव इस क्षेत्र के लिए बड़ा अवसर है। इसमें 600 से अधिक पर्यटन उद्योग से जुड़े डेलिगेट्स भाग ले रहे हैं। वीडियो कान्फ्रेंसिंग में कलेक्टर रीवा प्रतिभा पाल ने बताया कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव 26 जुलाई को रीवा के कृष्णा राज कपूर ऑडिटोरियम में रीजनल पर्यटन कॉन्क्लेव का शाम 6 बजे शुभारंभ करेंगे। समारोह में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। समारोह में पर्यटन व्यवसाय से जुड़े विशिष्ट व्यक्तियों का भी उद्बोधन होगा। कॉन्क्लेव में 27 जुलाई को अलग-अलग सत्रों में तीन दलों द्वारा रीवा संभाग में पर्यटन की संभावनाएं, पर्यटन उद्योग की चुनौतियाँ तथा पर्यटन क्षेत्र में निवेश के संबंध में विचार मंथन करेंगे। दोपहर बाद इन दलों को बघेला म्यूजियम रीवा, पुरवा जलप्रपात, बसामन मामा गौ अभ्यारण्य तथा मुकुंदपुर व्हाइट टाईगर सफारी का भ्रमण कराया जाएगा।

कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी द्वारा जिले से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध कराई गई। डिप्टी कलेक्टर एसपी मिश्रा, उपखण्ड अधिकारी मझौली आरपी त्रिपाठी तथा जिला जनसम्पर्क अधिकारी मुकेश मिश्रा एनआईसी से वीडियो कांफ्रेंसिंग में सम्मिलित हुए।

स्कूल टाइम में पढ़ाना छोड़कर दुकान में बेचते हैं जूते

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। जिले के शिक्षा गारंटी शाला, ग्राम बारा के प्रधानाध्यापक आनंद जायसवाल का एक वीडियो सामने आया है। इसमें वे स्कूल से अनुपस्थित होकर दुकान पर कपड़े और जूते बेचते नजर आ रहे हैं। यह वीडियो 23 जुलाई का बताया जा रहा है। ग्रामीण आलोक कुमार द्विवेदी के मुताबिक, स्कूल के पास ही प्रधानाध्यापक की कपड़े और जूते की दुकान है। वहां वे अकसर बच्चों को क्लास में छोड़कर दुकान पहुंच जाते हैं। ग्रामीणों ने कई बार उन्हें समझाने का प्रयास किया कि स्कूल के बाद दुकान चलाएं, लेकिन उनका कहना है कि दुकान पर भी देखना पड़ता है। बताया जा रहा है कि यह उनकी नियमित आदत थी। वे प्रतिदिन स्कूल छोड़कर बाजार में व्यवसाय कर रहे थे। ग्रामीणों का कहना है कि बच्चों की शिक्षा के साथ इस प्रकार का खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जनपद शिक्षा केंद्र के समन्वयक एलडी यादव ने बताया कि सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो के आधार पर शिक्षक को तीन दिन के भीतर जवाब देने के लिए कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है, अगर जवाब संतोषजनक नहीं होता है तो आगे कार्रवाई की जाएगी।

रोजगार आधारित शिक्षा रुझान एवं नए अवसर पर राष्ट्रीय कार्यशाला का लाइव प्रसारण

छात्राओं को रोजगार आधारित शिक्षा के नये आयामों की मिली जानकारी

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी में बुधवार 23 जुलाई को ''विकसित मध्यप्रदेश 2047'' विषय पर आधारित एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का सीधा प्रसारण दिखाया गया। यह कार्यशाला कुशाभाऊ ठाकरे हाल भोपाल में आयोजित की गई थी। कार्यशाला का उद्देश्य रोजगार आधारित शिक्षा की ओर रुझान और युवाओं के लिए नये अवसरों की पहचान करना था। महाविद्यालय में यह प्रसारण प्राचार्य डॉ. देवेन्द्र कुमार सोनी के संरक्षण एवं विभागाध्यक्ष हिंदी डॉ नागेंद्र सिंह के निर्देशन में दिखाया गया। डॉ. नागेन्द्र सिंह ने कार्यशाला से लाभान्वित छात्राओं को बताया कि इस राष्ट्रीय कार्यशाला से विद्यार्थियों को न केवल रोजगारोन्मुखी शिक्षा की उपादेयता समझ में आई, बल्कि विकसित मध्यप्रदेश 2047 की परिकल्पना के तहत राज्य के भावी विकास की दिशा में अपनी भूमिका तय करने की प्रेरणा भी मिली।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. अमृता ब्राह्मणे, डॉ. सतेन्द्र उपाध्याय, डॉ. अनीता तिवारी, डॉ. नवीन सिंह, डॉ. दिलीप यादव, डॉ. आराधना मिश्रा, डॉ. विजय अहिरवार, डॉ. प्रीति सतनामी, डॉ. रावेन्द्र यादव, प्रो. प्राची सिंह, प्रो. मोहित मेहरा, प्रो. रोहित साहू, डॉ. संदीप चौरसिया, डॉ. नंदकिशोर क्रोशिया, डॉ. चांदनी कुशवाहा, प्रो. ज्ञान प्रकाश पटेल, प्रो. राम बदन विश्वकर्मा, प्रो. मानसी भूर्तिया सहित समस्त प्राध्यापक और छात्राएं उपस्थित रहीं।

एंबुलेंस को पुलिस वाहन समझकर भागे तस्कर खेत में मिली कार से 3 क्विंटल गांजा बरामद, फरार आरोपियों की तलाश

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। जिले के सीधी थाना क्षेत्र में तस्कर एम्बुलेंस का सायरन सुनकर उसे पुलिस वाहन समझ बैठे, तो उन्होंने अपनी कार को एक खेत में उतार दिया। वाहन खेत में फंस गया और आरोपी कार छोड़कर फरार हो गए। पुलिस ने एक कार से 3 क्विंटल गांजा बरामद किया है। इस गांजे की कीमत लाखों रुपए आंकी गई है। स्थानीय लोगों ने बताया कि

एंबुलेंस के सायरन की आवाज सुनकर कार को खेत में उतरते देखा और मदद के लिए दौड़े। इस दौरान वाहन में सवार लोग भागने लगे, जिससे लोगों को संदेह हुआ। उन्होंने तुरंत पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और वाहन की तलाशी ली। तलाशी में वाहन से तीन क्विंटल गांजा बरामद हुआ। पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई करते हुए वाहन को जब्त कर लिया है।

उड़ीसा ला रहे थे खेप: पुलिस अधीक्षक रामजी श्रीवास्तव ने बताया कि तस्कर उड़ीसा से गांजा लाकर अन्य प्रदेशों में बेचने की तैयारी में थे। कार पर सीजी 10 बीई 9319 नंबर प्लेट लगी हुई है। पुलिस इस नंबर की प्रामाणिकता की जांच कर रही है कि यह असली है या फर्जी। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि वे इस मामले में गंभीरता से काम कर रहे हैं और फरार हुए आरोपियों की तलाश जारी है।

नवांकुर सखी योजना के तहत जनअभियान परिषद के नेतृत्व में हुआ पौधरोपण

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के अध्यक्ष डॉ मोहन यादव की मंशानुसार प्रदेश की मातृ शक्तियों को पर्यावरण संरक्षण के साथ जोड़ने के उद्देश्य से अद्वितीय पहल का शुभारंभ करते हुए नवांकुर सखी योजना मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग के द्वारा संचालित की जा रही है। योजना के अंतर्गत सीधी जिले के पांच विकासखंडों में चयनित 25 आदर्श ग्रामों में 100-100 मातृ शक्तियों का पंजीयन कर 11-11 पौधे वितरित करने की योजना तैयार की गई है। उक्त के अनुक्रम में हरियाली अमावस्या 24 जुलाई से कार्यक्रम का शुभारंभ कर 30 जुलाई तक 28000 पौधों का वितरण करना लक्ष्य रखा गया है। 24 जुलाई को विकासखंड मझौली के आदर्श ग्राम सेंधवा विकासखंड रामपुर नैकिन के आदर्श ग्राम पंखुरी 586 विकासखंड सीधी के आदर्श ग्राम कोल्हू डीह तथा विकास खंड मझौली के आदर्श ग्राम पाड में हरियाली यात्रा के अंतर्गत कलश यात्रा का भव्य आयोजन किया गया। तदुपरांत उपस्थित अतिथियों के द्वारा प्रत्येक मातृशक्ति को 11-11 पौधे वितरित कर उनके पोषण और संरक्षण की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के द्वारा भेजे गए वीडियो संदेश का वाचन कर पौधारोपण का कार्य किया गया। मातृ शक्तियों को पुष्प वर्षा के उपरांत आभार प्रदर्शन कर कार्यक्रम का समापन हुआ। समस्त चारों स्थान में जिला समन्वयक मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के साथ ही विकासखंड समन्वयक एवं नवांकुर संस्थाएं तथा परामर्शदाताओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

टाटा हिताची ने लांच किया शिनराय प्राइम सीईवी 5, आपका सबसे भरोसेमंद पार्टनर

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। भारतीय कंस्ट्रक्शन मशीन उद्योग की अग्रणी कम्पनी टाटा हिताची ने आज शिनराय प्राइम सीईवी 5 लॉन्च करने की घोषणा की। यह नेक्स्ट-जेन बैकहो लोडर है जो भरोसा, विश्वसनीयता और कार्य प्रदर्शन को नया आयाम देने के लिए खास तौर से डिज़ाइन किया गया है। शिनराय प्राइम में बेजोड़ ईंधन सक्षमता, कम आरपीएम पर अधिक टॉर्क और कम उत्सर्जन जैसे

खास गुण हैं क्योंकि यह अत्याधुनिक सीईवी 5 मानकों पर खरा उतरता है। इसका स्ट्रक्चर उच्च-श्रेणी के स्टील और रोबोटिक वेल्डिंग से बनता है इसलिए यह अधिक टिकाऊ है और कठिन से कठिन परिस्थितियों में बखूबी काम करने के लिए तैयार है। शिनराय प्राइम सीईवी 5 लॉन्च का आयोजन 25 जुलाई को सिटी पार्क रिसॉर्ट, सतना में हुआ। इस अवसर पर सम्मानित ग्राहक, टाटा हिताची और कैलाश इंफ्राटेक प्राइवेट लिमिटेड (अधिकृत डीलर पार्टनर) के वरिष्ठ प्रबंधन सभी की उपस्थिति थी। शिनराय प्राइम सीईवी 5 कंस्ट्रक्शन और उत्खनन से लेकर कृषि और ट्रेंचिंग तक विभिन्न उपयोगों के लिए डिज़ाइन किया गया है। कई खास खूबियों की वजह से इसकी अलग पहचान है जैसे लंबे अंतराल पर मेंटेनेंस की जरूरत, परिचालन का खर्च कम और मशीन का अधिक उपयोगी होना।

शिनराय प्राइम सीईवी 5 लॉन्च के अवसर पर, टाटा हिताची के महाप्रबंधक-मार्केटिंग सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने कहा, "शिनराय प्राइम सीईवी 5 लॉन्च करते हुए हमें एक ऐसी मशीन पेश करने का गर्व है जिसमें एक साथ कार्य प्रदर्शन, विश्वसनीयता और सस्टेनेबलिटी जैसे सभी गुण हैं। यह खास कर भारतीय ग्राहकों की बदलती जरूरतों के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस नेक्स्ट-जेन बैकहो लोडर में आप नवाचार और ग्राहक-केंद्रित डिज़ाइन को लेकर टाटा हिताची की प्रतिबद्धता देखेंगे। टाटा हिताची इसी प्रतिबद्धता के साथ आधुनिक टेलीमैटिक्स के माध्यम से बेहतर कार्य क्षमता, कम परिचालन खर्च और बेहतर मशीन प्रबंधन सुनिश्चित करती है। शिनराय प्राइम सिर्फ़ सिर्फ एक मशीन नहीं है यह विश्वास और सही मूल्यों का भरोसा देती है।

संपादकीय

तकनीक बन रही है जनकल्याण का माध्यम

एक बात साफ हो जानी चाहिए कि तकनीक मात्र उपकरण बनें तो यह मानवता के हित में नहीं हो सकती। ऐसे में तकनीक को जनकल्याण का माध्यम बनाना होगा। डिजिटल युग में बहुत कुछ बदला है। हमारे सोच का तरीका बदला है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में आज सामान्य मानव मन से भी अधिक तेजी से तकनीक काम करने लगी है। तकनीक ने इतना विकास कर लिया है कि अब मशीनें सोचने लगी है। हमारे चिंतन और मनन को प्रभावित करने लगी है। इसमें कोई दो राय नहीं कि तकनीक ने जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रवेश करने के साथ सहज बनाया है। समय तो यहां तक बदल गया है कि अब पढ़ना-लिखना ही नहीं तकनीक ने सोचना और निकश तक पहुंचना आरंभ कर दिया है। यह विकास का उजला पक्ष होने के साथ ही इसके पीछे छुपा काला पक्ष भी गंभीर है। हांलाकि प्रकृति अपना काम कर रही है और वह लगातार हमें चेतावनी देती जा रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) हमारे जीवन का हिस्सा बन चुकी है। वह हमारे निर्णयों को प्रभावित कर रही है, हमारी प्राथमिकताएं तय कर रही है, और हमारी सोच को प्रभावित कर रही है। इस दौर में हमें ऐसे नेतृत्व की जरूरत है जो तकनीक के चमत्कारों को संवेदनशीलता और दूरदृष्टि के साथ दिशा दे। एआई एक्शन समिट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सटीक और सामयिक टिप्पणी की है। दरअसल टेक्नोलॉजी का लोकतंत्रीकरण होना चाहिए। हमें जन-केंद्रित एप्लिकेशन बनाने चाहिए। साथ ही हमें साइबर सुरक्षा, दुष्प्रचार और डीपफेक जैसी चुनौतियों का समाधान भी करना होगा। डिजिटल नवाचार का उपयोग अब पारदर्शिता, सहभागिता और संवेदनशील सेवा-प्रणाली के रूप में सामने आ रहा है। हमारा देश आज एआई और सेमीकंडक्टर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की मजबूत नींव रख रहा है। 2024 में केंद्र सरकार द्वारा अनुमोदित इण्डिया एआई मिशन इसका जीता जागता उदाहरण है। इस मिशन के तहत 10,300 करोड़ रु. के निवेश से देश में एक विश्वस्तरीय एआई कंप्यूटिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य है 18,693 जीपीयू से लैस साझा कंप्यूटिंग क्षमता विकसित कर भारत को वैश्विक एआई शक्तियों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा करना है। विशेषज्ञों को मानना है कि यह सिस्टम ओपन-सोर्स एआई मॉडल डीपसीक से 9 गुना अधिक सक्षम होगा और चैटजीपीटी जैसी प्रणालियों की दो-तिहाई शक्ति तक पहुंचेगा। यानी यह केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं होगी अपितु डिजिटल क्षेत्र में भारत को आत्मसम्मान व दुनिया के देशों की अग्रणी पंक्ति में खड़ा करने की घोषणा है। दरअसल तकनीक का उपयोग मानव कल्याण के उद्देश्य से होना चाहिए। सरकारें इस बात को समझती है और यही कारण है कि ई-गवर्नेंस से लेकर डिजिटल शिक्षा, एआई आधारित स्वास्थ्य सेवाओं और नागरिक सुविधा केंद्रों तक हर नीति के केंद्र में आम आदमी है, सिस्टम नहीं। राज्यों में तकनीक को 'डिजिटल एक्सेस' के बजाय 'डिजिटल एम्पावरमेंट' के रूप में उपयोग किया जाने लगा है। और यही बदलाव राज्यों को एक सॉफ्ट-टेक्नोलॉजिकल स्टेट बना रहा है। राज्यों में चल रहे हरित अभियान, जल संरक्षण योजनाएं, सौर ऊर्जा प्रोत्साहन और ईको-टूरिज्म और इसी तरह की अन्य पहल इस सोच के साथ धरातल पर उतर रही हैं। यहां तक कि मानसिक स्वास्थ्य अभियान, डिजिटल डिटॉक्स क्लासेस और संस्कार संवाद जैसे कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। ताकि युवा स्मार्टफोन के स्क्रीन से आगे सोच सकें और अपनी जड़ों से जुड़े रहें। आज सवाल यह नहीं कि हमें तकनीक से डरना चाहिए या नहीं, बल्कि यह है कि हम तकनीक को किस नैतिक दायरे में संचालित कर सकते हैं। केन्द्र के साथ ही राज्यों की सरकारें इसे समझने लगी है और यह कारण है कि राज्यों द्वारा तकनीक का उपयोग भविष्य की संभावनाओं और जनकल्याण नीतियों के रुप में सामने आ रहा है।

दुनिया की लाखों जिन्दगियां में जहर घोलता अकेलापन

ललित गर्ग

'हर छठा व्यक्ति अकेला है' -यह निष्कर्ष विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की ताज़ा रिपोर्ट का है, जिसने पूरी दुनिया को चिन्ता में डाला है एवं सोचने पर मजबूर कर दिया है कि आखिर हम कैसी समाज-संरचना कर रहे हैं, जो इंसान को अकेला बना रही है। निश्चित ही बढ़ता अकेलापन कोई साधारण सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि एक ऐसा वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य संकट बनता जा रहा है, जो व्यक्तियों, समाजों, और व्यावसायिक संस्थानों को अंदर ही अंदर खोखला कर रहा है। दुनिया के करोड़ों लोग टूटे रिश्तों व संवादहीनता की स्थितियों में नितांत खामोशी का जीवन जी रहे हैं। गौर करे तो इंसान के भीतर की ये खामोशी लाखों जिंदगियां में महामारी के रूप में जहर घोल रही है।

विडंबना यह है कि इस संकट का सबसे ज्यादा शिकार युवा हो रहे हैं। वृद्ध तो पहले से ही सामाजिक एवं पारिवारिक विसंगतियों में उपेक्षित है। निश्चय ही जीवन की विसंगतियां एवं विषमताएं बढ़ी हैं। कई तरह की चुनौतियां सामने हैं। पीढ़ियों के बीच का अंतराल विज्ञान व तकनीक के विस्तार के साथ तेज हुआ है। डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट बताती है कि दुनिया की लगभग 16 प्रतिशत आबादी आज किसी न किसी रूप में अकेलेपन, सामाजिक अलगाव या भावनात्मक दूरी का शिकार है। यह स्थिति केवल वृद्धजनों तक सीमित नहीं रही, बल्कि युवाओं, कामकाजी पेशेवरों, और यहां तक कि बच्चों तक फैल चुकी है। डिजिटल युग में जहां सब कुछ 'कनेक्टेड' लगता है, वहीं इंसानी रिश्तों में एक अदृश्य दूरी, कृत्रिमता और आत्मीयता का अभाव देखने को मिल रहा है। सोशल मीडिया की आभासी दुनिया में हम जितने अधिक जुड़े हैं, उतने ही भावनात्मक रूप से अकेले हो गए हैं। व्यक्तिवादी सोच, सामाजिक दुष्प्रभाव एवं रिश्तों की बिखरती दीवारों में अकेलेपन का घातक प्रभाव सामाजिक ढांचे पर गहरे रूप में पड़ रहा है। पारिवारिक संबंधों में दरारें, विवाहों में असंतोष, और तलाक की बढ़ती दरें इसकी साफ़ निशानी हैं। युवा पीढ़ी में अवसाद, आत्महत्या की प्रवृत्ति और नशे की ओर झुकाव एक चिंताजनक ट्रेंड बन गया है। बुजुर्गों में अकेलेपन से उत्पन्न अल्ज़ाइमर, डिमेंशिया और अन्य मानसिक रोग तेजी से बढ़ रहे हैं।

अकेलापन केवल किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत कमजोरी नहीं है, बल्कि यह समाज की सामूहिक विफलता का संकेत है। जब हम तकनीक, दौड़ और स्वार्थ में इतने उलझ जाते हैं कि किसी के पास सुनने का समय नहीं रहता, तब अकेलापन जन्म लेता है। अब समय आ गया है कि हम फिर से रिश्तों, संवाद और करुणा की दुनिया की ओर लौटें। अन्यथा अकेलापन, उदासी और असंतुष्टि की भावनाएं कचोटती रहेगी। मानो खुद के होने का एहसास, कोई इच्छा ही ना बची हो। तब छोटी-छोटी चीजों में छिपी खूबसूरती नजर ही नहीं आती। ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत से लोग जिंदा हैं, पर जीवित होने के जादुई एहसास को कम ही छू पाते हैं। सोच के भौतिकवादी एवं सुविधावादी होने से हमारी आकांक्षाओं का आसमान ऊंचा हुआ है। लेकिन यथार्थ से साम्य न बैठा पाने से कुंठा, हताशा व अवसाद का विस्तार हो रहा है। जिसके चलते निराशा हमें एकाकीपन या अकेले होने की ओर धकेल देती है। निश्चित ही सोशल मीडिया का क्रांतिकारी ढंग से विस्तार हो रहा है। लेकिन इसकी हकीकत आभासी है, कृत्रिम है, दिखावटी है। हर कोई सोशल मीडिया मंचों पर हजारों मित्र होने का दावा करता है, लेकिन ये मित्र कितने संवेदनशील है? कितने करीब है? इन प्रश्नों का उत्तर नकारात्मक ही है, यथार्थ के जीवन में व्यक्ति बिल्कुल अकेला एवं गुमशुम होता है। आभासी मित्रों का कृत्रिम संवाद हमारी जिंदगी के सवालों का समाधान नहीं दे सकता, अकेलापन दूर नहीं कर सकता। निश्चित रूप से कृत्रिम रिश्ते हमारे वास्तविक रिश्तों के ताने-बाने को मजबूत नहीं कर सकते।

विडंबना यह है कि कृत्रिमताओं के चलते कहीं न कहीं हमारे शब्दों की प्रभावशीलता में भी कमी आई है। जिससे व्यक्ति लगातार एकाकी जीवन की ओर उन्मुख होना लगा है। हमारे संयुक्त परिवारों का बदलता स्वरूप एवं एकल परिवारों का बढ़ता प्रचलन भी इसके मूल में है। पहले घर के बड़े बुजुर्ग किसी झटके या दबाव को सहजता से झेल जाते थे। सब मिल-जुलकर आर्थिक व सामाजिक संकटों का मुकाबला कर लेते थे। लेकिन अब बुजुर्ग एकाकीपन एवं अकेलापन से जूझ रहे है। केरल में इसी तरह के वृद्ध-संकट को महसूस करते हुए वहां की सरकार ने वरिष्ठ नागरिक आयोग बनाया है, जो एक सूझबूझभरा कदम है। आज वृद्धों को अकेलापन, परिवार के सदस्यों द्वारा उपेक्षा, दुर्व्यवहार, तिरस्कार, कटुक्तियां, घर से निकाले जाने का भय या एक छत की तलाश में इधर-उधर भटकने का गम हरदम सालता रहता। वृद्ध समाज इतना कुंठित, अकेला एवं उपेक्षित क्यों है, एक अहम प्रश्न है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनकी सरकार अनेक स्वस्थ एवं आदर्श समाज-निर्माण की योजनाओं को आकार देने में जुटी है, उन्हें वृद्धों को अकेलेपन को लेकर भी चिन्तन करते हुए वृद्ध-कल्याण योजनाओं को लागू करना चाहिए, ताकि वृद्धों की प्रतिभा, कौशल एवं अनुभवों का नये भारत-सशक्त भारत के निर्माण में समुचित उपयोग हो सके एवं आजादी के अमृतकाल में अकेलापन एक त्रासदी न बन सके।

कामकाजी परिस्थितियों का लगातार जटिल होना एवं महंगी होती जीवनशैली ने अकेलापन के संकट को गहरा बनाया है। उन परिवारों में यह स्थिति और जटिल है, जहां पति-पत्नी दोनों कामकाजी हैं और बच्चे हॉस्टलों व बोर्डिंग स्कूल में रह रहे हैं। व्यावसायिक क्षेत्रों में भी काम का बोझ इंसानों को अकेला बना रहा है। कार्यालयों और कार्यस्थलों पर भी अकेलापन एक गंभीर चुनौती बन रहा है। कर्मचारी भावनात्मक जुड़ाव की कमी के कारण कार्य में रुचि नहीं लेते। टीम वर्क, इनोवेशन और सहयोग पर इसका नकारात्मक असर पड़ता है। अकेलापन लंबे समय तक बना रहा तो यह बर्नआउट, कार्य से असंतोष और कर्मचारी त्यागपत्र जैसी स्थितियों को जन्म देता है। इससे उत्पादकता में भी गिरावट आती है। मेकिन्से और डेलॉइट जैसी वैश्विक कंसल्टिंग फर्म्स की रिपोर्टें दर्शाती हैं कि अकेलापन कर्मचारियों की उत्पादकता को 15-20 प्रतिशत तक घटा सकता है, जिससे कंपनियों को अरबों डॉलर का नुकसान हो सकता है। अकेलेपन के इस संकट से निपटने के लिए व्यक्तिगत, सामाजिक और संस्थागत स्तर पर सामूहिक प्रयास ज़रूरी हैं। परिवार, मित्रों और सहयोगियों के साथ समय बिताना ही असली 'समृद्धि' है। कंपनियों और संस्थानों में कर्मचारियों की मानसिक और भावनात्मक स्थिति को समझने वाला नेतृत्व चाहिए। डिजिटल संवाद की जगह आमने-सामने संवाद, 'वर्क फ्रॉम होम' की जगह 'वर्क विद कम्युनिटी' को प्राथमिकता देनी होगी। ऑफिसों और समाज में काउंसलिंग, समूह चर्चा, मेडिटेशन, और योग को प्रोत्साहन दिया जाए। सरकारों को अकेलेपन को एक जनस्वास्थ्य समस्या के रूप में मान्यता देनी चाहिए और सामाजिक समावेश के लिए ठोस कार्यक्रम चलाने चाहिए।

डब्ल्यूएचओ का वह आंकड़ा भी चौंकाता है कि अकेलापन हर साल तकरीबन आठ लाख लोगों की जीवन लीला समाप्त कर रहा है। जो यह दर्शाता है कि व्यक्ति न केवल समाज व अपने कार्यालयी परिवेश से अलग-थलग हुआ है, बल्कि वह परिवार से भी कटा है। पिछले दिनों देश के शीर्ष उद्योगपतियों ने कार्यालयों में काम के घंटे बढ़ाने का आग्रह किया था।

कांवड़ यात्रा के साथ आम यातायात पर भी ध्यान दें

अशोक मधुप

अबसे एक दिन बाद 23 जुलाई को शिवरात्रि का पर्व है। लगभग एक सप्ताह से कावंड़ यात्रा चल रही है। सड़कों पर कांवड़ियों के समूह पवित्र नदियों से जल लेकर अपने गन्तव्यों के लिए रवाना हो चुके हैं। शिवरात्रि पर जलाभिषेक के बाद कावंड़ यात्रा पूर्ण हो जाएगी। सड़कों से गुजरते भोले के भक्तों के काफिले अपनी मंजिल पर पंहुचकर अगले छह माह के लिए रूक जाएंगे। जाड़ों में दुबारा शिवरात्रि पड़ेगी, तब ये यात्रा फिर शुरू होगी। फिर कांवड़ियों के काफिलें सड़कों पर होंगे। ज्योतिर्लिंग वाले सभी प्रदेशों में इस यात्रा को देखते हुए व्यापक व्यवस्था की जाती है। अन्य शिवालयों पर भी भारी तादाद में श्रद्धालु जल चढ़ाते हैं। कई बार किसी कांवड़ से किसी के टकराने या कावड़िए के दुर्घटनाग्रस्त होने पर कावड़िए प्राय: हंगामा करते हैं। कई जगह तोड़-फोड आगजनी आदि पर उतर आते हैं, इसलिए प्रशासन पहले से सचेत रहता है। केंद्र में भाजपा सरकार आने और कई प्रदेशों में भाजपा की सरकार होने के बाद से इस कांवड़ यात्रा पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। इनके लिए आने-जाने के मार्ग निर्धारित होने लगे। इन कांवड़ियों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। अधिकतर महत्वपूर्ण मार्ग इनके लिए आरक्षित किए जाने के कारण इन मार्ग के वाहन दूसरे मार्ग पर भेजे जाने लगे। इससे आम लोगों को परेशानी होने लगी। तीन घंटे का रास्ता छह से सात घंटे में पूरा होने लगा। वाहनों को 60 से 70 किलो मीटर ज्यादा चलना पड़ा। वाहनों के ज्यादा चलने के तेल ज्यादा लगा। तेल का ज्यादा लगना राष्ट्रीय नुकसान है और व्यक्ति की समय की बरबादी। व्यवस्था ऐसी बनाई जाए कि कांवड़ यात्रा भी निर्विघ्न रूप से पूरी हो और दूसरे वाहन और यात्रियों को कोई परेशानी न हो। नियमित यातायात

इस यात्रा के दौरान सुगमता से चलता रहे। आज हालत यह है कि कई दिन से उत्तर प्रदेश- दिल्ली एनसीआर और उत्तरांचल के मार्गों पर दिन में ट्रकों की आवाजाही बंद है। सड़कों के किनारे ट्रकों की लंबी-लंबी लाइन लगी है। पूरे दिन वह सड़क किनारे खड़े रहते हैं। रात में उन्हें चलने की अनुमति मिलती है। इस प्रक्रिया से राष्ट्र की कितनी शक्ति व्यर्थ जाती है, इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

शिवरात्रि भगवान शिव का पर्व है। यह पर्व पूरे भारत वर्ष में मनाया जाता है। करोड़ों की संख्या में शिव के उपासक पवित्र नदियों के स्थलों से उनका जल कांवड़ में लेकर आते और शिवालयों पर जाकर चढ़ाते हैं। ज्योतिर्लिंग पर तो शिवरात्रि पर जल चढ़ाने के साथ उत्तर भारत क्या पूरे देश में यह पर्व श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। कांवड़ यात्रा कई दिन चलती है। सड़कों पर कावड़ियों का रेला ही रेला दिखाई देता है। श्रद्धालु कावंड़ियों को ज्यादा से ज्यादा सुविधा उपलब्ध कराकर पुण्य लाभ पाने के लिए तत्पर रहतें हैं। ये कांवड़ियों मार्ग पर उनके खानेङ्कपीने की ठहरने आदि की निशुल्क व्यवस्था करते हैं। भंडारे लगाते हैं। यात्रा पर निकलने से पहले कावंड़िए तैयारी करते हैं। कांवड़, उसके सजाने आदि और अपनी यात्रा का सामान खरीदते हैं। अपने साथ चलने वाले वाहन किराए पर लेते हैं। इन पर किराए का म्युजिक सिस्टम लगाते हैं। कांवडिए की अलग तरह की भगवा रंग की टी शर्ट चल पड़ी। इसका ही अब लाखों रूपये का कारोबार बन गया। कांवड़ यात्रा से हजारों लोगों का रोजगार चलता है। इस यात्रा पर खरबों रूपये का बिजनेस होता है। इसलिए ये यात्रा होनी चाहिए। इस यात्रा की व्यवस्थाएं भी भव्य होनी चाहिए। कांवड़ियों की व्यापक सुरक्षा और बढ़िया मार्ग की व्यवस्था होनी चाहिए। जगह-जगह आपातकाल में इनके उपचार के प्रबंध हों । इनकी सुविधा के लिए कोई कसर उठकर नही रखी जानी चाहिए। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस व्यवस्था पर स्वंय नजर रखते हैं। वे कांवड़ियों पर फूलों की वर्षा भी करते हैं। उत्तर भारत में सावन की शिवरात्रि पर श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह रहता है। कांवड़ यात्रा के कारण उत्तर भारत में यातायात बुरी तरह प्रभावित होता है। हरिद्वार प्रशासन के अनुसार पिछले साल साढ़े चार करोड़ से ज्यादा शिवभक्त जल लेने हरिद्वार पंहुचे। 2023 में चार करोड़ श्रद्धालु आए थे। ये यात्रा अभी चल रही है, अनुमान है कि इस बार अकेले हरिद्वार से ही कांवड़ लाने वाले श्रद्धालुओं की संख्या पांच करोड़ से ज्यादा हो जाएगी, किंतु कुछ स्थानों पर पूरे सावन कांवड़ चढ़ती हैं। श्रद्धालु के समूह हरिद्वार आते और जल लेकर अपने गंत्व्यों की ओर रवाना होते रहते हैं।

उत्तर भारत की इस कांवड़ यात्रा को देखते हुए उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और हरियाणा सरकार व्यापक व्यवस्थाएं करती हैं, किंतु यात्रा के समय ये सब व्यवस्थांए बौनी पड़ जाती हैं। इसी कारण कई जगह कांवड़ियों के हंगामा करने की सूचनाएं आती हैं। कुछ जगह तोड़फोड़ और आगजनी तक हो जाती है। इस सबका कारण यात्रा से कुछ पहले तैयारी करना है, जबकि इसके लिए पूरे साल तैयारी की जाती चाहिए। इसके लिए अलग से विभाग होना चाहिए, किंतु ऐसा होता नहीं।

केंद्र और राज्य सरकारों को कावंड़ियों की सुविधा के साथ आम आदमी की सुविधा का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। व्यवस्था की जानी चाहिए कि कांवड़ यात्रा के दौरान आम यातायात प्रभावित न हो। केंद्र एक्सप्रेस वे बना रहा है ताकि यातायात के किसी वाहन को परेशानी न हो। इसके लिए कांवड यात्रा वाले प्रदेश की सरकारों का केंद्र के साथ मिल बैठ कर प्लान करना चाहिए। कावंड यात्रा वाले मार्ग पहले ही इस तरह बनाए जांए कि उसकी साइड से आम यातायात सुगमता से अनवरत चलता रहे। कांवड यात्रा वाले मार्ग पर कांवड़ यात्रियों के लिए पहले से ही दो अलग लेन बनाकर रखी जा सकती हैं। यात्रा के समय में इन पर कांवड़िए और उनके वाहन चलें, बाद में ये लेन आम ट्रैफिक के लिए प्रयोग हों। कांवड़ यात्रा वाले मार्ग पर कांवड़ यात्रियों के आराम रूकने के स्थान पहले से चिंहित हों। स्थान ऐसे हों कि यहीं कांवड़ शिविर भी लग सकें। 1990 के आसपास कांवड़ यात्रा का इतना प्रचलन नहीं था। आज यह बढ़ता जा रहा है। अब साढे चार करोड़ के आसपास कांवड़िए हरिद्वार से कांवड़ ला रहे हैं। इनकी बढ़ती संख्या को देखते हुए हो सकता है कि आने वाले कुछ सालों में यह संख्या बढ़कर दुगनी या उससे भी ज्यादा हो जाए। इसलिए हमें अभी से इसके लिए व्यवस्था बनानी होगी। प्लानिंग करनी होगी। हरिद्वार आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए हरिद्वार के लिए अतिरिक्त ट्रेन चलानी होंगी। कावंड़ यात्रा के समय आम यात्री को कांवडियों की भीड़ के कारण भारी परेशानी होती है। ट्रेन के साथङ्कसाथ इनकी संख्या को देखते हुए स्पेशल बसे चलाईं जांए। कांवड़ यात्रा के कारण छात्रों की परेशानी को देखते हुए कई जगह स्कूल कॉलेज बंद करने पड़तें हैं।

नारायणपुर की लड़कियों को ले जा रहे थे आगरा

स्टेशन पर बजरंग दल ने पकड़ा,धर्मांतरण का लगाया आरोप, 2 नन और युवक पर केस दर्ज

मीडिया ऑडीटर, दुर्ग (निप्र)। छत्तीसगढ़ के दुर्ग रेलवे स्टेशन पर मानव तस्करी और धर्मांतरण के शक में जमकर हंगामा हुआ। बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने दो नन पर आरोप लगाया कि वह नारायणपुर जिले की तीन लड़कियों को बहला-फुसलाकर आगरा ले जा रही थीं। बजरंग दल की शिकायत पर दुर्ग रेलवे स्टेशन दो नन और एक युवक के खिलाफ धारा 143 बीएस के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई की गई है। यह मामला जीआरपी थाना भिलाई-3 के अंतर्गत दुर्ग जीआरपी चौकी का है। रेलवे स्टेशन पर कुछ लड़कियां घूमती नजर आई तो बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने उससे पूछताछ की तो पता चला कि नन द्वारा उन्हें आगरा ले जाया जा रहा है। कार्यकर्ताओं को इस पर शक होने पर तीनों लड़कियों और उनके साथ दो नन और एक युवक को पकड़कर जीआरपी थाने ले आई।

रेलवे स्टेशन पर बजरंग दल कार्यकर्ताओं का हंगामा: इस दौरान बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने मानव तस्करी और धर्मांतरण का आरोप लगाते हुए दुर्ग रेलवे स्टेशन के जीआरपी चौकी में हंगामा शुरू कर दिया। बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने स्टेशन पर ही जमकर नारेबाजी की। इस बीच कार्यकर्ताओं ने इसकी जानकारी बजरंग दल की जिला संयोजिका ज्योति शर्मा को दी। कार्यकर्ताओं की सूचना पर बजरंग दल जिला संयोजिका ज्योति शर्मा बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं संग मौके पर पहुंची। मौके पर पहुंची बजरंग दल की जिला संयोजिका ज्योति शर्मा ने बताया कि दो नन (सिस्टर) लड़कियों को नौकरी का झांसा देकर ले जा रही थीं। उनका आरोप है कि यह मामला सिर्फ नौकरी दिलाने का नहीं, बल्कि मानव तस्करी और धर्मांतरण से जुड़ा हुआ है। ज्योति शर्मा ने दोनों नन पर मानव तस्करी और धर्मांतरण का आरोप लगाया है। उन्होंने बताया कि सुबह उन्हें कार्यकर्ताओं से जानकारी से मिली कि दुर्ग रेलवे स्टेशन पर दो नन और एक युवक नारायणपुर की तीन लड़कियों को ले जा रहे हैं। पूछताछ में तीनों लड़कियों का कहना है कि हमको जबरदस्ती पकड़ ले जा रहे थे। हमको नहीं पता कहां ले जा रहे थे। उनके साथ जो लड़का पकड़ा गया है वो इससे पहले भी तीन बार लड़कियों को भेज चुका है। पूछताछ में इन लड़कियों के नाम कमलेश्वरी, ललिता और सुखमति है। जब नारायणपुर की उन लड़कियों के घर में संपर्क किया गया तो पता चला कि उन्हें झूठ बोलकर लाया गया था। उनको पता ही नहीं कि उनकी बेटियां कहां जा रही हैं।

लड़की के पास मिले कई लड़कियों के फोटो: ओरछा गांव की ये लड़कियां नारायणपुर घूमने जाने के लिए निकली हुई हैं। उनके घर वाले ओरछा थाने में एफआईआर करवा रहे हैं। ये लोग यहां की लड़कियों को बेचते हैं। पकड़े गए युवक का तीन आधार कार्ड है। एक लड़की के पास डायरी मिली है। उसमें कई राज्यों के नाम हैं। इसके अलावा उस डायरी में पादरियों का नंबर भी है। साथ ही उनके पास 8 से 10 लड़कियों के फोटो भी मिले हैं। बजरंग दल की शिकायत पर जीआरपी थाना भिलाई-3 के अंतर्गत दुर्ग जीआरपी चौकी में दोनों और युवक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है। भिलाई जीआरपी प्रभारी राजकुमार बोरझा ने बताया कि बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने शिकायत दर्ज कराई है कि तीन लड़कियों को धर्म परिवर्तन के उद्देश्य से आगरा ले जाया जा रहा था। शिकायत मिलने के बाद जांच की गई और प्राथमिक जांच के आधार पर दो नन और एक युवक के खिलाफ धारा 143 बीएस के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई की गई है। उन्होंने बताया कि उन तीनों लड़कियों में दो ओरछा और एक नारायणपुर जिले की रहने वाली हैं। लड़कियों से पूछताछ में पता चला कि उन्हें काम का प्रलोभन देकर बाहर ले जाया जा रहा था। फिलहाल आगे की कार्रवाई जारी है।

सरकारी जमीन पर अवैध क्रशर खदान, बिना अनुमति हो रही पत्थर की खुदाई

हाईकोर्ट ने खनिज सचिव से मांगा शपथपत्र

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (निप्र)। छत्तीसगढ़ के सक्ती जिले में खनिज विभाग की मिलीभगत से बगैर अनुमति सरकारी जमीन क्रशर खदान लगा दिया गया है। जिससे पत्थर निकालने के बाद जमीन पर बड़े-बड़े गड्?ढे हो गए हैं। इस मामले में याचिका दायर होने के बाद गलती छिपाने गड्?ढों पर मिट्?टी डाला जा रहा है। हाईकोर्ट ने इसे गंभीरता से लेते हुए खनिज सचिव को शपथपत्र के साथ जवाब मांगा है।

ग्राम नंदेली निवासी खोलबाहरा ने अपने वकील के माध्यम से हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर की है। इसमें बताया गया है कि जैजैपुर तहसील के ग्राम नंदेली स्थित खसरा नंबर 16/1, क्षेत्रफल 14.2 हेक्टेयर सरकारी जमीन है, जिस पर राजेश्वर साहू सहित अन्य निजी व्यक्तियों ने क्रशर खदान बना लिया है, जिसमें से लंबे समय से गौण खनिज पत्थर का अवैध उत्खनन किया जा रहा है।

शिकायत के बाद भी जिला प्रशासन ने नहीं की कार्रवाई: याचिकाकर्ता ने कोर्ट को बताया कि परेशान ग्रामीणों ने इसकी शिकायत तहसील और जिला प्रशासन से की। कई बार शिकायत करने के बाद भी प्रशासन ने कोई कार्रवाई नहीं की, तब याचिकाकर्ता ने एक रिट याचिका लगाई थी, जिसे अदालत ने 30 जून 2025 के आदेश में यह कहते हुए खारिज कर दिया था कि याचिकाकर्ता व्यक्तिगत रूप से प्रभावित नहीं है। हालांकि, अदालत ने उन्हें जनहित याचिका दायर करने की छूट दी थी। इसके बाद संविधान के अनुच्छेद 226 के तहत वर्तमान जनहित याचिका दाखिल की गई है।

200 पुराना पीपल का पेड़ मकान पर गिरा, मकान का 1 हिस्सा क्षतिग्रस्त

मीडिया ऑडीटर, बलौदाबाजार (निप्र)। गांधी चौक के पास गुरुवार शाम करीब 7.30 बजे एक बड़ा हादसा टल गया। बालक शाला परिसर में स्थित लगभग 200 साल पुराना पीपल का विशालकाय पेड़ अचानक गिर गया। यह पेड़ बसंत सराफ के मकान पर गिरा, जिसमें उस समय करीब 10 लोग मौजूद थे। गनीमत रही कि किसी कोई को चोट ही आई। लेकिन मकान क्षतिग्रस्त हो गया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि, लगभग एक माह पहले ही इस पेड़ का आधा हिस्सा गिर चुका था। मोहल्लेवासियों ने पेड़ की कमजोर स्थिति को देखते हुए पार्षद से इसे कटवाने की गुजारिश भी की थी। लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। पेड़ गिरने से मनोज दुबे के घर के पास की बिजली लाइन भी प्रभावित हो गई।

पास लगे सीसीटीवी में कैद घटना: पूरी घटना पास लगे सीसी कैमरे में कैद हो गई। जब रात में पेड़ बिजली तार पर गिरा, तो जोरदार चिंगारियां निकलीं। ये चिंगारियां गुब्बारों की तरह बहुत दूर तक फैल गईं। मोहल्ले से गुजर रहे लोग बाल-बाल बचे। गली में दर्जनों कारें खड़ी थीं। अगर किसी गाड़ी पर चिंगारियां गिरतीं तो स्थिति गंभीर हो सकती थी।

स्कूटी और पैदल गुजर रहे लोग बाल-बाल बचे: घटना के दौरान स्कूटी और पैदल गुजर रहे लोगों की जान बच गई। विशेषज्ञों का सुझाव है कि पुराने और कमजोर पेड़ों की समय रहते पहचान कर उचित कार्रवाई की जाए। इससे भविष्य में ऐसी दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है।

टीचर ने पड़ोसी के घर खड़ी कार-बाइक को जलाया

अपनी बाइक से पेट्रोल निकालकर ले गया, फिर लगाई आग

मीडिया ऑडीटर, दुर्ग (निप्र)। जिले में एक गवर्नमेंट टीचर ने अपने पड़ोसी के एक घर में खड़ी कार-बाइक को जला दिया दी। नंदिनी टाउनशिप में रहने वाले 2 परिवार के बीच आपसी मनमुटाव था। जिसके बाद आरोपी टीचर अपनी बाइक से पेट्रोल निकालकर कैन में भरकर विश्वकर्मा परिवार के घर ले गया और गाड़ियों को आग के हवाले कर दिया।

मामला नंदिनी थाना क्षेत्र का है। गनीमत रही कि समय रहते पड़ोसियों की मदद से आग पर काबू पा लिया था, जिससे घर में मौजूद चार सदस्य बाल बाल बचे लेकिन गाड़ी जलकर राख हो गई। पुलिस ने दोनों आरोपियों को पकड़ लिया है। जिसके घर में आग लगी वह भी गवर्नमेंट टीचर है। घटना 27 जून की है।

संदेश के आधार पर पड़ोसी से पूछताछ: एएसपी पद्मश्री तवंर ने बताया कि नंदिनी टाउनशिप निवासी रामेश्वर कुमार विश्वकर्मा ने 27 जून को नंदिनी थाना में आकर शिकायत दर्ज कराई थी कि 26-27 जून की रात को अज्ञात हमलावरों ने उसके घर के बाहर खड़ी कार व बाइक में आग लगा दी है । शिकायत पर जांच में जुटी पुलिस ने पूछताछ शुरू की। संदेश के आधार पर पड़ोसी टाउनशिप नंदिनी निवासी राजेश कुमार मरकाम और उसके साथी उमेश पाटील को पकड़कर कड़ाई से पूछताछ शुरू की। उन्होंने ही आपसी रंजिश के तहत इस घटना को अंजाम देना स्वीकार कर लिया।

परिवार को खत्म करने की साजिश: आरोपियों ने बताया रामेश्वर से आपसी मनमुटाव और वाद विवाद के चलते परिवार सहित खत्म करने की यह साजिश रची थी। दुर्ग पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मिले सबूत के आधार पर 24 जुलाई को उन्हें गिरफ्तार कर जुडिशल डिमांड पर न्यायालय में पेश कर दिया है। आगजनी की इस घटना का एक वीडियो भी सामने आया था जिसमें मोहल्ले के लोग आग बुझाने की कोशिश करते नजर आ रहे थे। अपराधियों के बुलंद हौसले की वजह से क्षेत्र में दहशत का माहौल बन गया था।

आबकारी आरक्षक भर्ती परीक्षा, नकल रोकने के लिए होगा जैमर का इस्तेमाल

मीडिया ऑडीटर, कोंडागांव (निप्र)। 27 जुलाई को होने वाली व्यापम आबकारी आरक्षक भर्ती परीक्षा के लिए जिला प्रशासन ने पूरी तैयारी कर ली है। शुक्रवार को कलेक्टर नुपुर राशि पन्ना ने अधिकारियों के साथ बैठक की और नकल रोकने के लिए सख्त निर्देश दिए। कलेक्टर ने स्पष्ट किया कि परीक्षा में किसी भी प्रकार की अनियमितता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। सभी परीक्षा सेंटरों पर हैंडहेल्ड मेटल डिटेक्टर, मोबाइल जैमर और उड़नदस्ते तैनात किए जाएंगे।

बनाए गए हैं 18 परीक्षा सेंटर: नोडल अधिकारी और डिप्टी कलेक्टर किशोर शर्मा ने बताया कि जिले में 18 परीक्षा सेंटर बनाए गए हैं। कुल 4620 कैंडिडेट परीक्षा देंगे। सभी सेंटरों पर एंट्री से पहले शारीरिक जांच और मेटल डिटेक्टर से जांच अनिवार्य होगी। महिला कैंडिडेट की जांच केवल महिला पुलिसकर्मी करेंगी।

इन सामानों पर रहेगा बैन: हर सेंटर पर एक पुरुष और एक महिला पुलिसकर्मी की तैनाती की गई है। परीक्षा में मोबाइल फोन, स्मार्टवॉच, पर्स, स्कार्फ, बेल्ट, टोपी और अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामान ले जाने पर बैन है। कैंडिडेट एग्जाम हॉल में जूते, मोजे, बेल्ट, कोट, जैकेट या टोपी नहीं पहन सकेंगे।

बाल प्वाइंट पेन कर सकेंगे इस्तेमाल: इसके अलावा कानों में ज्वेलरी पहनने की परमिशन नहीं है। केवल फ्लैट चप्पल या सैंडल पहनने की परमिशन है। कैंडिडेट्स को हाथ आधी बांह के हल्के रंग के कपड़े पहनने होंगे। उत्तर लिखने के लिए केवल नीले या काले बाल प्वाइंट पेन का इस्तेमाल करने की परमिशन है। अन्य पेन और पेंसिल का इस्तेमाल नहीं कर सकते।

हैदराबाद से 5-बाइकों की चोरी, बस्तर में बेचने की कोशिश

सोल्ड बाइक में कार का नंबर लगाकर डील कर रहे थे, 3 गिरफ्तार, 1 की तलाश जारी

मीडिया ऑडीटर, जगदलपुर (निप्र)। छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में पुलिस ने बाइक चोर गिरोह का पर्दाफाश किया है। इस गिरोह के लोगों ने हैदराबाद से 5 सोल्ड बाइकों की चोरी कर ली थी। इसके बाद वे इन बाइकों पर किसी भी कार का फर्जी नंबर लगाकर, फर्जी आरसी बनाकर बेचने की तैयारी कर रहे थे। हालांकि, पुलिस ने इस गिरोह के 3 लोगों को पकड़ लिया है। इनके पास से 7 लाख 50 हजार रुपए की 5 बाइकें और प्रिंटर मशीनें बरामद की हैं। हैदराबाद के 1 मुख्य आरोपी की तलाश जारी है। मामला जिले के गीदम थाना क्षेत्र का है।

पहले समझिए पुलिस ने इन्हें कैसे पकड़ा: दरअसल, एक दिन पहले गीदम पुलिस वाहनों की चेकिंग कर रही थी। इस दौरान एक लाल रंग की स्प्लेंडर बाइक को रुकवाया। बाइक चालक ने अपना नाम गुलशन नाहटा निवासी गीदम बताया। बाइक पर सीजी 17 सी 1880 नंबर की प्लेट लगी थी। वहीं जब इससे गाड़ी से संबंधित दस्तावेज मांगे गए तो इसने नहीं दिया। तभी पुलिस को इसपर शक हुआ और ऑनलाइन बाइक नंबर की डिटेल्स निकाली। पुलिस को पता चला कि ये बाइक का नंबर नहीं बल्कि महेश राम बघेल के नाम से रजिस्टर अल्टो कार का नंबर है। जिसके बाद पुलिस को शक हुआ कि ये चोरी की बाइक है। पुलिस ने गुलशन को हिरासत में लिया। जिसके बाद उससे और पूछताछ की गई तो उसने बताया कि गाड़ी हैदराबाद से चोरी कर लाई गई है। उसके गैराज में 4 और बाइकें जिसमें 2 बुलेट, 1 पल्सर और 1 स्प्लेंडर खड़ी है।

बोरी के अंदर मिली सड़ी-गली लाश, सिर-गले में चोट के निशान

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। राजधानी रायपुर में एक बोरी के अंदर युवक की लाश मिली है। 24 जुलाई की शाम बेंद्री गांव के पत्थर खदान में पानी के ऊपर एक बोरी तैर रही थी, तभी किसी ने बोरी के बाहर पैर निकला देखा तो थाने में सूचना दी। मामला राखी थाना क्षेत्र का है। पुलिस के मुताबिक, मृतक की पहचान दिनेश मानिकपुरी के तौर पर हुई है जो कायाबांधा का रहने वाला हैं। बॉडी तीन से चार दिन पुरानी बताई जा रही है, लाश के सिर और गले में गंभीर चोटें हैं। बॉडी का अधिकतर हिस्सा गल गया है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जांच में जुटी एफएसएल और क्राइम की टीम: पुलिस के मुताबिक, गुरुवार शाम 6 बजे के करीब एक लाश की सूचना मिली। पुलिस ने मौके पर जाकर देखा तो लाश एक बोरी के भीतर थी। लाश का पैर बोरी से बाहर निकला हुआ था। इस केस में एफएसएल और क्राइम की टीम भी जांच में जुट गई है। पंचनामा के बाद पुलिस लाश को पोस्टमॉर्टम के लिए भिजवाया हैं। पोस्टमॉर्टम के बाद बॉडी परिजनों को सौंप दी जाएगी। मृतक के घर वालों से पूछताछ जारी हैं।

खरोरा नलवा-माइंस का विरोध, बारिश के बीच 900 लोग कर रहे प्रदर्शन

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। खरोरा में लगने वाले जिंदल के नलवा सीमेंट प्लांट की एक खदान का ग्रामीण विरोध कर रहे हैं। बारिश के बीच करीब 6 गांव के 900 लोग नारेबाजी कर रहे हैं। ग्रामीणों के मुताबिक, खदान में चूना पत्थर निकालने के लिए विस्फोट से होने वाले कंपन से मकानों की नींव को नुकसान पहुंचेगा। इसलिए वे खदान नहीं लगने देना चाहते। बता दें कि 11 सौ एकड़ जमीन पर खदान बनने वाला है, इससे 55 हजार लोग प्रभावित होंगे। इस संबंध में खरोरा से लगे मोतिमपुर में आज जनसुनवाई रखी गई है। जिसमें शामिल होने एक रात पहले ही ग्रामीण टेंट लगाकर डटे हुए हैं। प्रदर्शन कर रहे हैं। ग्रामीणों के विरोध को देखते हुए भारी पुलिस बल तैनात है। अपर कलेक्टर, पर्यावरण अधिकारी, एसपी समेत 6 तहसीलदार में भी मौके पर मौजूद हैं।

6 गांवों से 90-400 मीटर दूर प्रस्तावित है खदान: खरोरा में इस खदान के लगने से 6 गांव के 55 हजार लोग प्रभावित होंगे। प्रस्तावित खदान से पचरी गांव की दूरी 90 मीटर, छड़िया 140 मीटर, मंधईपुर 170 मीटर, नहरडीह 400 मीटर, मोतिमपुर 230 मीटर और आलेसुर 350 मीटर की दूरी पर स्थित है।

ब्लास्टिंग, भारी वाहनों से डरे ग्रामीण: प्रभावित ग्रामीण के मुताबिक खदान में ब्लास्ट कर चूना पत्थर निकाला जाएगा। खनन कार्य और भारी वाहनों का आवागमन रात में भी जारी रहेगा। स्कूलों के सामने से खनिज ले जाने वाले वाहनों की आवाजाही से बच्चों की सुरक्षा की चिंता रहेगी। जिसका वे विरोध कर रहे हैं।

सीएम हाउस में हरेली त्योहार का आयोजन, मंत्री-विधायक शामिल

हरेली के साथ शुरू हुए त्योहार; पूजा कर गेड़ी चढ़ी, पूरे छत्तीसगढ़ में मना उत्सव

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। छत्तीसगढ़ का पहला त्योहार हरेली गुरुवार को प्रदेशभर में धूमधाम से मनाया गया। इसके साथ ही प्रदेश में पारंपरिक त्यौहारों की शुरुआत हो गई। सीएम हाउस में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने गौरी-गणेश, नवग्रह की पूजा कर भगवान शिव का अभिषेक किया। हरेली के पूजा-पाठ में विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह, उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, कृषि मंत्री राम विचार नेताम, महिला बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े और राजस्व मंत्री टंक राम वर्मा भी शामिल हुए। साय ने नांगर, रापा, कुदाल व दूसरे कृषि यंत्रों की विधिवत पूजा-अर्चना कर हरेली उत्सव का शुभारंभ किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री साय ने प्रदेश के किसानों समेत समस्त छत्तीसगढ़ वासियों की खुशहाली एवं सुख-समृद्धि की कामना की। साय ने पशुधन संरक्षण के संदेश के साथ गाय और बछड़े को पारंपरिक लोंदी और हरा चारा खिलाया। उन्होंने कहा कि हरेली पर्व केवल किसानों का उत्सव नहीं है, बल्कि यह प्रकृति, पर्यावरण और पशुधन से जुड़े हमारे गहरे रिश्ते को भी दर्शाता है।

कलाकारों ने किया प्रदर्शन: कार्यक्रम स्थल को पारंपरिक छत्तीसगढ़ी रंग-रूप में सजाया गया था, जहां ग्रामीण परिधान पहने अतिथि, कलाकार और आमजन लोक संस्कृति में रमे हुए नजर आए। हरेली उत्सव के दौरान मुख्यमंत्री निवास में परम्परागत और आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रदर्शन किया गया। साय ने प्रदर्शनी स्थल का भ्रमण कर विभिन्न पारंपरिक यंत्रों और वस्तुओं का अवलोकन किया। प्रदर्शनी में काठा, खुमरी, झांपी, कांसी की डोरी और तुतारी जैसे ऐतिहासिक कृषि उपकरणों को प्रदर्शित किया गया। कृषि विभाग द्वारा आयोजित आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी, जिसमें नांगर, कुदाली, फावड़ा, रोटावेटर, बीज ड्रिल, पावर टिलर और स्प्रेयर जैसे यंत्रों का प्रदर्शन किया गया।

कलेक्टर के निर्देशानुसार आबकारी विभाग इंदौर द्वारा नशा मुक्ति के लिये की जा रही है सशक्त पहल

इन्दौर, (एजेंसी)। कलेक्टर आशीष सिंह के निर्देशानुसार एवं सहायक आबकारी आयुक्त अभिषेक तिवारी के मार्गदर्शन में आबकारी विभाग इंदौर द्वारा जिले में नशामुक्ति अभियान के अंतर्गत प्रभावशाली जनजागरण गतिविधियाँ संचालित की जा रही हैं। इस अभियान के अंतर्गत जिले की सभी 173 कंपोजिट मदिरा दुकानों पर नशामुक्ति संबंधी पोस्टर प्रदर्शित किए गए हैं , जिनके माध्यम से आमजन को नशे के दुष्परिणामों एवं उससे बचाव के उपायों की जानकारी दी जा रही है। साथ ही विभाग के फील्ड स्टाफ द्वारा विभिन्न स्कूलों एवं कॉलेजों में जाकर विद्यार्थियों को नशे की बुराइयों के प्रति जागरूक किया गया, उन्हें

वैकल्पिक स्वस्थ जीवनशैली की जानकारी दी गई और ना कहना सीखें जैसे प्रेरक संदेश साझा किए गए। इसके अंतर्गत आबकारी के विभिन्न वृत्त प्रभारियों द्वारा इंदौर में विभिन्न क्षेत्रों में गतिविधियां संचालित की गई। वृत्त मालवा मिल अ प्रभारी आबकारी उपनिरीक्षक महेश पटेल द्वारा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय विजयनगर में पूर्व पार्षद जितेन्द्र बुंदेला की उपस्थिति में कक्षा 9 से 12वीं तक के छात्रों को नशे के दुष्प्रभाव और उससे बचने के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। इसी तरह वृत्त भोई मोहल्ला प्रभारी आबकारी उपनिरीक्षक मनमोहन शर्मा, वृत मालवा मिल ब प्रभारी उप निरीक्षक सुनील मालवीय और वृत आंतरिक एक प्रभारी उपनिरीक्षक आशीष जैन द्वारा ग्रीनलैंड उच्चतर माध्यमिक विद्यालय विजयनगर और शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दूधिया में छात्रों को नशे के दुष्प्रभाव और उससे बचने के बारे में जानकारी दी गई। वृत्त पलासिया प्रभारी आबकारी उपनिरीक्षक प्रियंका चौरसिया, वृत सांवेर प्रभारी आबकारी उपनिरीक्षक त्रिअम्बिका शर्मा और वृत आंतरिक दो प्रभारी आबकारी उपनिरीक्षक जया मुजाल्दे द्वारा शासकीय माध्यमिक विद्यालय पांदा और लास सेजेस उच्चतर माध्यमिक स्कूल राऊ में छात्रों को नशे के दुष्प्रभाव और उससे बचने के बारे में जानकारी दी गई।

उद्यानिकी तथा खाद्य प्रसंस्करण विभाग की योजनाओं के लिए करें ऑनलाइन पंजीयन

नर्मदापुरम, (एजेंसी)। उद्यानिकी तथा खाद्य प्रसंस्करण विभाग भोपाल द्वारा नर्मदापुरम जिले को वर्ष 2025-26 हेतु एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना अंतर्गत विभिन्न घटकों जैसे फल क्षेत्र विस्तार पैशन फूट, एवोकाडो, अंजीर, ब्लूबेरी (ड्रिप रहित), आम, अमरूद, लीची, अनार, नींबू वर्गीय (सामान्य दूरी, उच्च घनत्व एवं अति उच्च घनत्व ड्रिप रहित), संकर सब्जी क्षेत्र विस्तार (हाईविड), प्याज एवं लहसुन क्षेत्र विस्तार, पुष्प क्षेत्र विस्तार लूज फ्लावर, मसाला क्षेत्र विस्तार (बीजीय मसाला), (कंदीय मसाला) अदरक हल्दी लहसुन, जीर्णोद्धार / जीर्ण वृक्षारोपण का प्रतिस्थापन, कैनोपी प्रबंधन (गृत/पुराने पौधों को हटाना, कैनोपी प्रबंधन (टॉप वर्किंग एवं नए पौधे के साथ गैप फिलिंग), कैनोपी प्रबंधन (पोषक तत्व प्रबंधन, कीट प्रबंधन और सिंचाई कार्य), संरक्षित खेती / पॉली हाउस में उगाए जाने वाले कार्नेशन और जरबेरा की खेती, प्लास्टिक मल्चिंग, हाइड्रोपोनिक्स और एटोपोनिक्स, सब्जी फसलों के लिए सहायता प्रणाली, संरक्षित खेती, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन, एकीकृत कीट प्रबंधन, जैविक खेती-वर्मीकम्पोस्ट यूनिट, बागवानी यंत्रीकरण, नेपसेक स्प्रेयर / पावर आपरेटेड स्प्रेयर 16 लीटर क्षमता, फसलोपरांत प्रबंधन आदि के तहत भौतिक-वित्तीय लक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जिसमें योजना अंतर्गत लाभांवित किये जाने का प्रावधान है।

उक्त योजनांतर्गत जो भी कृषक उक्त योजना का लाभ लेना चाहते हैं वे विभाग के पोर्टल पर पंजीयन व आवेदन कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिये विकासखंड स्तरीय वरिष्ठ उद्यान विकास अधिकारी कार्यालय अथवा जिला कार्यालय में सम्पर्क कर सकते है। योजना में लाभ लेने के लिए कृषक को पासपोर्ट साईज फोटो, आधार कार्ड नम्बर, बैंक पास बुक, खसरा बी-1 सत्यापित प्रति, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति हेतु जाति प्रमाण-पत्र, कृषक का मोबाईल नम्बर आदि दस्तावेजों की आवश्यकता रहेगी।

बारिश के शुरू होते ही बढ जाता है, डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियों का खतरा

हरदा, (एजेंसी)। स्वास्थ्य विभाग द्वारा बारिश के मौसम में डेंगू व मलेरिया की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए सलाह जारी की गई है। डॉ. एच.पी.सिह मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला हरदा ने बताया कि बारिश के दिनो में डेंगू, मलेरिया एवं चिकुनगुनिया जैसी बीमारियॉ तेजी से फैलती है। इसका मुख्य कारण यह है कि डेंगू, मलेरिया एवं चिकुनगुनिया आदि बीमारी को फैलाने वाले मच्छर साफ एवं रूके हुये पानी में पनपते है। मलेरिया विभाग इसके अति संवेदनशील क्षेत्रो को चिन्हित कर अपनी लार्वा विनाशी दल द्वारा घरों का सर्वे करा कर लार्वा पाये जाने पर लार्वा को नष्ट कर प्रतिबंधात्मक कार्यवाही करता है साथ ही मलेरिया विभाग द्वारा जनजागरूकता के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर लोगो को बीमारियों के प्रति जागरूक किया जाता है।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. सिंह ने बताया कि डेंगू वायरस से होने वाली बीमारी है जो एडिज एजिप्टि मच्छर के काटने से फैलती है। तेज बुखार, तेज सिर दर्द, जोड़ो में दर्द, आँखो के पीछे दर्द, शरीर पर लाल चकते होना तथा शरीर से रक्त स्त्राव होना डेंगू बीमारी के प्रारंभिक लक्षण हैं। डेंगू के प्रारंभिक लक्षण होने पर नजदीकि स्वास्थ्य केन्द्र पर जाकर चिकित्सक से सलाह लेकर जॉच एवं उपचार लें। उन्होने बताया कि उपचार की सुविधा सभी स्वास्थ्य संस्थाओं एवं जॉच की सुविधा जिला चिकित्सालय हरदा में नि:शुल्क उपलब्ध है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. सिंह ने बताया कि मलेरिया प्लाज्मोडियम परजीवी के संक्रमण से होने वाला संक्रामक रोग है, जो स्वस्थ्य मनुष्य में संक्रमित मादा एनोफिलिज मच्छर के काटने से फैलता है। मलेरिया बुखार दो प्रकार का होता है प्लाजमोडियम वाईवेक्स मलेरिया एवं प्लाजमोडियम फैल्सीफेरम मलेरिया। कंपकंपी वाली ठंड लगकर बुखार आना, सिरदर्द, जी मिचलना एवं उल्टी, मांसपेशियों एवं जोड़ो में दर्द, थकान एवं कमजोरी तथा पसीना आकर बुखार उतरना मलेरिया के प्रमुख लक्षण हैं। मलेरिया का उपचार भारत सरकार की दवा नीति के अनुसार सभी स्वास्थ्य संस्थाओ पर नि:शुल्क किया जाता है। मलेरिया के लक्षण दिखाई देने पर खून की जॉच कराये। मलेरिया की जॉच एवं उपचार सभी शासकीय स्वास्थ्य संस्थाओं एवं स्वास्थ्य कार्यकर्ता, आशा कार्यकर्ता के पास नि:शुल्क उपलब्ध है।

संयुक्त संचालक महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा किया गया आंगनबाड़ी केंद्रों का निरीक्षण

गुना, (एजेंसी)। संयुक्त संचालक महिला एवं बाल विकास विभाग सीमा शर्मा द्वारा महिला बाल विकास विभाग परियोजना बमौरी अंतर्गत सहराना कटर्रा, अमरोद चकएवं अमरोद आंगनबाड़ी केंद्रों का निरीक्षण किया गया केंद्रों पर वितरित किये जाने वाले पोषण आहार की गुणवत्ता की जांच की एवं आंगनवाडी केन्द्र संचालन मे आवश्यक सुधार हेतु निर्देश दिये। निरीक्षण उपरांत शर्मा द्वारा बाल संप्रेक्षण गृह गुना का निरीक्षण किया गया एवं बालकों को प्रतिदिन योग कराने एवं सुरक्षा संबंधी निर्देश दिये गये। कलेक्ट्रेट

कार्यालय के जनसुनवाई कक्ष में विभाग की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। जिसमें पोषण ट्रैकर एप पर होने वाली स्त्र क्रस (फेस रिकग्निशन सिस्टम) की कम प्रगति वाले सेक्टर एवं आंगनबाड़ी केंद्र की समीक्षा कर कम प्रगति वाले सेक्टर पर्यवेक्षकों के प्रति रोष व्यक्त किया। (फेस रिकग्निशन सिस्टम) के कार्य को 31 जुलाई 2025 तक शत प्रतिशत पूर्ण करने एवं कार्य मे लापरवाही बरतने वाली कार्यकर्ता एवं पर्यवेक्षकों के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करने के निर्देश दिये।

समीक्षा बैठक में जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग श्री अब्दुल गफ्फार खान, सहायक संचालक दिनेश कुमार चंदेल, समस्त परियोजना अधिकारी एवं पर्यवेक्षक सहित समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

त्यौहार स्नान पर्व के दौरान कानून एवं शांति व्यवस्था बनाये रखने हेतु

नर्मदापुरम, (एजेंसी)। जुलाई एवं अगस्त माह में हरियाली अमावस्या 24 जुलाई, नाग पंचमी 29 जुलाई, रक्षाबंधन 09 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त, जन्माष्टमी 16 अगस्त, अन्नकूट/श्रावण पूर्णिमा 16 अगस्त, पोला पिठौरा/स्नान दान श्राद्ध अमावस्या 23 अगस्त, हरतालिका तीज 26 अगस्त, 27 अगस्त गणेश चतुर्थी, 28 अगस्त पर्युषण पर्व के अवसर पर अपने-अपने अनुविभाग स्तर अंतर्गत उल्लेखित त्यौहार स्नान पर्व के दौरान कानून एवं शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए अतिरिक्त जिला दण्डाधिकारी नर्मदापुरम डी के सिंह ने कार्यपालिक दण्ड अधिकारियों/अधिकारियों की ड्यूटी लगाई। जारी आदेशानुसार अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी सिंह ने अनुविभागीय दण्डाधिकारी इटारसी टी0 प्रतीक राव (आई.ए.एस.), अनुविभागीय दण्डाधिकारी पिपरिया अनिशा श्रीवास्तव (आई.ए.एस.), अनुविभागीय दण्डाधिकारी सोहागपुर अनिल जैन, अनुविभागीय दण्डाधिकारी नर्मदापुरम नीता कोरी, सिटी मजिस्ट्रेट नर्मदापुरम बृजेन्द्र रावत अनुविभाग के अंतर्गत आने वाले घाट स्थलों पर कार्यपालिक अधिकारियों की ड्यूटी लगाने एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने हेतु प्रभारी अधिकारी का दायित्व सौपा है।

केंद्रीय दिव्यांग छात्रवृत्ति योजना वर्ष 2025-26 के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित

नर्मदापुरम, (एजेंसी)। दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग भारत सरकार द्वारा वर्ष 2025-26 के लिए राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल पर दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए तीन छात्रवृत्ति योजनाओं के अंतर्गत आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। उक्त छात्रवृत्ति योजना में दिव्यांग विद्यार्थियों के ऑनलाइन आवेदन करने के लिए छात्रवृत्ति पोर्टल प्रारंभ हो चुका है। योजना की मार्गदर्शिका एवं पात्रता संबंधी शर्तें पोर्टल पर उपलब्ध है। योजना अंतर्गत प्री मैट्रिक कक्षा 9वी एवं 10वीं के लिए आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 अगस्त है। इसी प्रकार पोस्ट मैट्रिक कक्षा 11वी यूजी/पीजी डिप्लोमा स्तर के लिए ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर एवं उच्च श्रेणी की शिक्षा (अधिसूचित संस्थानों के लिए) आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर 2025 है।

कैरियर काउंसलर्स के पैनल हेतु आवेदन आमंत्रित

नर्मदापुरम, (एजेंसी)। मध्यप्रदेश शासन की कैरियर काउंसलिंग योजना के अंतर्गत जिला रोजगार कार्यालय के माध्यम से इच्छुक आवेदकों को कैरियर संबंधी मार्गदर्शन देने हेतु काउंसलर्स की टीम गठित की जाना है। काउंसलरर्स की टीम में एक मनोवैज्ञानिक के अलावा मार्गदर्शन हेतु तीन विशय विशेषज्ञ रहेंगे जो क्रमांश प्रवेश प्रतियोगिता परीक्षा एवं स्वरोजगार प्रशिक्षण के संबंध में जानकारी एवं मार्गदर्शन देगें। काउंसलर्स को नियमानुसार मानदेय दिया जायेगा। काउंसलरों के पैनल हेतु कैरियर मार्गदर्शन के क्षेत्र में अनुभव रखने वाले व्यक्ति जिला रोजगार कार्यालय नर्मदापुरम में दिनांक 08 अगस्त तक आवेदन कर सकते है।

बाल अधिकारों व नशामुक्ति के संबंध में किशोर एवं ग्रामीणजन को किया गया जागरूक

हरदा, (एजेंसी)। म.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जबलपुर के निर्देशानुसार एवं प्रधान जिला न्यायाधीश व अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण तृप्ति शर्मा के मार्गदर्शन में बुधवार को जिले के हाई स्कूल रुन्दलाय, एकीकृत माध्यमिक शाला गुल्लास, ग्राम पंचायत भवरास, ग्राम पंचायत लछौरा एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नयागांव में विधिक जागरूकता शिविरों का आयोजन किया गया। शिविर में न्यायाधीश एवं सचिव विधिक सेवा प्राधिकरण चंद्रशेखर राठौर ने बच्चों के अधिकारों के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए जागरूकता बढ़ाने, शिक्षा को बढ़ावा देने और बाल यौन शोषण, बाल विवाह, बाल श्रम आदि अपराधों के बारे में लोगों को जागरूक किया। उन्होने बताया गया कि ''डॉन स्कीम'' राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा नशा उन्मूलन हेतु शुरू की गई एक पहल है। इसका उद्देश्य बालकों व किशोरों में नशीले पदार्थों के उपयोग के विरूद्ध जागरूकता बढ़ाना और नशे के शिकार लोगों को कानूनी सहायता व कल्याणकारी सेवाएं प्रदान करना है। सचिव राठौर ने नालसा नशा पीड़ितों को विधिक सेवाऐं एवं नशा उन्मूलन के लिए विधिक सेवाऐं योजना के उपबंधों की जानकारी देते हुए बताया कि

योजना के तहत ड्रग्स तस्करी एवं ड्रग्स पीड़ितों को जिला प्राधिकरण के द्वारा आवश्यक विधिक सेवा उपलब्ध करायी जाती है।

योजना के तहत ड्रग्स पीड़ितों को पहचानने, उनका उपचार करने तथा नशा मुक्ति के पश्चात उनके पुनर्वास में उपलब्ध बुनियादी सुविधाओं को गतिमान कराया जाता है। साथ ही ड्रग्स के खतरों एवं इसके उन्मूलन के प्रभावी उपायों के विषय में संवेदनशील बनाया जाता है। जिला प्राधिकरण एवं राज्य की कई एजेन्सियों के साथ साथ गैर सरकारी संगठन भी नशीले पदार्थो की तस्करी और मादक पदार्थो के उन्मूलन के क्षेत्र में कार्यरत है।

जिला विधिक सहायता अधिकारी सौरभ कुमार दुबे ने बच्चों के लिए मैत्रीपूर्ण विधिक सेवा योजना, पॉक्सो एक्ट, मध्यप्रदेश अपराध पीड़ित प्रतिकर योजना, नालसा लैंगिक हमलों व अन्य अपराधों की पीड़िताओं सर्वाईवर्स महिलाओं के लिए प्रतिकर योजना की जानकारी उपस्थितजनों को दी। दुबे ने राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा संचालित ''संवाद योजना'' के तहत अनुसुचित जनजाति एवं सुदुर क्षेत्र में निवासरत लोगों को भी उनके संवैधानिक व वैधानिक अधिकारों की जानकारी दी। शिविर में ग्राम रूंदलाय सचिव नारायण प्रसाद भाटी, ग्राम गुल्लास सचिव मोहन, प्रधान पाठक भारती परिहार, ग्राम भवरास सरपंच रामप्रसाद धुर्वे, सचिव मोहन गदवाने, सहायक सचिव सरोज, ग्राम लछौरा सरपंच शंकर सिंह राजपूत, सचिव बसंत कुमार चंदेले, ग्राम नयागांव सरपंच महेंद्र कुमार यदुवंशी, सह सचिव धर्मेंद्र धनवारे एवं शिक्षकगण, छात्र छात्राएं, ग्रामीणजन एवं पैरालीगल वॉलेंटियर्स राहुल जाट उपस्थित रहे।

गत वर्ष इसी अवधि में हुई थी 489.6 मिलीमीटर औसत वर्षा

नर्मदापुरम, (एजेंसी)। जिले में 1 जून 2025 से प्रातः 8 बजे तक जिले में 658.0 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज हुई है। गत वर्ष इसी अवधि में 489.6 मिलीमीटर औसत वर्षा हुई थी। अधीक्षक भू-अभिलेख नर्मदापुरम ने बताया है कि 23 जुलाई से 24 जुलाई 2025 को प्रातः 8 बजे तक तहसील नर्मदापुरम में 46.4 मिलीमीटर, सिवनीमालवा में 36.0 मिलीमीटर, इटारसी में 120.8 मिलीमीटर, माखननगर में 21.0 मिलीमीटर, सोहागपुर में 21.0 मिलीमीटर, पिपरिया में 2.0 मिलीमीटर, बनखेड़ी में 1.4 मिलीमीटर, पचमढ़ी में 82.8 एवं तहसील डोलरिया 64.2 मिलीमीटर वर्षा दर्ज हुई है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार 1 जून से 24 जुलाई 2025 को प्रातः 8 बजे तक तहसील नर्मदापुरम में 720.7 मिलीमीटर, सिवनीमालवा में 642.0 मिलीमीटर, इटारसी में 621.2 मिलीमीटर, माखननगर में 418.0 मिलीमीटर, सोहागपुर में 705.0 मिलीमीटर, पिपरिया में 643.0 मिलीमीटर, बनखेड़ी में 808.2 मिलीमीटर, पचमढ़ी में 862.0 एवं तहसील डोलरिया में 502.2 मिलीमीटर कुल वर्षा दर्ज हुई है। जिले की सामान्य औसत वर्षा 1370.5 मिलीमीटर है।

अधीक्षक भू-अभिलेख नर्मदापुरम ने बताया है वर्तमान में सेठानी घाट का जलस्तर 939.20 फीट है, तवा जलाशय का 1158.50 फीट है, बरगी जलाशय का 418.90 मीटर एवं बारना जलाशय 346.20 मीटर दर्ज किया गया है। उल्लेखनीय है सेठानी घाट का अधिकतम जल भराव 967.00 फीट है, तवा जलाशय का अधिकतम जल भराव 1166.00 फीट है, बरगी जलाशय का जल भराव 422.76 मीटर है तथा बारना जलाशय का अधिकतम जल भराव 348.55 मीटर है।

उल्टी दस्त प्रभावित ग्राम चिरमा टेकरी पहुंचा जिला चिकित्सा दल

बैतूल, (एजेंसी)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.मनोज कुमार हुरमाडे के निर्देश पर गुरुवार को जिला चिकित्सा दल के मेडिकल विशेषज्ञ डॉ.रोहित पराते एवं शिशु रोग चिकित्सक पीजीएमओ डॉ.सुरेन्द कुमार कुशवाह द्वारा उल्टी दस्त प्रभावित ग्राम चिरमा टेकरी शाहपुर का घर-घर भ्रमण कर मरीजों को देखा गया एवं उपचार किया गया। घर-घर भ्रमण के दौरान उल्टी-दस्त के 4 मरीज मिले एवं अन्य सरदर्द, हाथ पैर दर्द, खांसी-जुखाम के 20 मरीज मिले, जिन्हें उपचार दिया गया। 3 मरीजों को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र शाहपुर में उपचार के लिए भर्ती किया गया।

संभागायुक्त के.जी. तिवारी ने आमला तहसील का किया औचक निरीक्षण

बैतूल, (एजेंसी)। संभागायुक्त नर्मदापुरम श्री के.जी. तिवारी ने गुरुवार को कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के साथ आमला तहसील का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने तहसील कार्यालय की आधारभूत सुविधाओं शौचालय, पेयजल, बैठक व्यवस्था, सफाई तथा डिजिटल उपकरणों की स्थिति का विस्तार से अवलोकन किया। संभागायुक्त श्री तिवारी ने तहसील कार्यालय में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के लिए उपलब्ध सुविधाओं की समीक्षा करते हुए इसे और अधिक आधुनिक बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारियों को राज्य और जिला स्तरीय बैठकों में डिजिटल रूप से सुगमता से जुड़ने की सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए।

तहसील कोर्ट के निरीक्षण के दौरान संभागायुक्त श्री तिवारी ने आरसीएमएस पोर्टल पर दर्ज प्रकरणों की जानकारी ली और स्पष्ट निर्देश दिए कि कोई भी राजस्व प्रकरण ऑफलाइन दर्ज नहीं किया जाए। उन्होंने रेंडमली कुछ प्रकरणों का पोर्टल से मिलान भी

कराया, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पूरी प्रक्रिया डिजिटल और पारदर्शी हो। उन्होंने तहसीलदार को सख्त निर्देश दिए कि राजस्व मामलों में आदेश पारित होने के पश्चात संबंधित पक्षों को आदेशों की तामिली अनिवार्य रूप से तीन कार्यदिवसों के भीतर कराई जाए और तामिल दस्तावेजों को अपील अवधि के पश्चात तुरंत रिकॉर्ड रूम में सुरक्षित रूप से जमा कराया जाना सुनिश्चित करें। एसडीएम कोर्ट के निरीक्षण में संभागायुक्त श्री तिवारी ने आरसीएमएस पोर्टल पर दर्ज राजस्व प्रकरणों की स्थिति की जांच की। रेंडमली चुने गए प्रकरणों के आधार पर उन्होंने पाया कि मामलों के निराकरण की स्थिति संतोषजनक है।

निरीक्षण के दौरान संभागायुक्त ने तहसील कार्यालय की स्थापना व्यवस्था, हेल्प डेस्क अधिकारियों और कर्मचारियों की सेवा पुस्तिकाएं, आकस्मिक व्यय पंजी और अन्य प्रशासनिक दस्तावेजों का भी गहन अवलोकन किया।

टेस्ट सीरीज के बाद भारत और इंग्लैंड के बीच खेले जाएंगे टी20 और वनडे मैच

नई दिल्ली, (एजेंसी)। मौजूदा समय में भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जा रही है। जहां भारत का ये इंग्लैंड दौरान यहीं नहीं रुकने वाला है। टीम इंडिया अब अगले साल फिर अंग्रेजों से भिड़ने के लिए इंग्लैंड आएगी। जहां अगले साल 2026 में भारत और इंग्लैंड के बीच टी20 और वनडे सीरीज खेली जाएगी। जिसकी जानकारी खुद इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड ने दी है। भारतीय टीम का इंग्लैंड का ये दौरा इस साल खत्म नहीं होगा। अगले साल जुलाई में टीम इंडिया को फिर एक बार वापस आना है। भारत और इंग्लैंड के बीच 1 जुलाई से 11 जुलाई तक टी20 सीरीज खेली जाएगी। इस सीरीज में पांच मैच खेले जाएंगे।

सात्विक-चिराग की जोड़ी ने क्वार्टर फाइनल में बनाई जगह, प्रणय को मिली हार

नई दिल्ली, (एजेंसी)। सात्विक साईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की जोड़ी ने गुरुवार को इंडोनेशिया के लियो रोली कर्नांडो और बगास मौलाना को सीधे गेम में हराकर चाइना ओपन सुपर 1000 बैडमिंटन टूर्नामेंट के पुरुष युगल के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। हालांकि, एचएस प्रणय 65 मिनट तक चले पुरुष एकल के दूसरे दौरे के मैच में चीनी ताइपे के छठे वरीय चोऊ तिएन चेन से 21-18, 15-21, 8-21 से हार कर बाहर हो गए। विश्व की पूर्व नंबर एक भारतीय जोड़ी ने अपने धैर्य का अच्छा नमूना रेश करते हुए एक कड़े मुकाबले में आठवीं वरीयता प्राप्त इंडोनेशियाई जोड़ी पर 21-19, 21-19 से जीत हासिल की। सात्विक और चिराग को जीत के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी क्योंकि दोनों ही गेम में पलड़ा इधर से उधर झुकता रहा। पहले गेम में इंडोनेशियाई जोड़ी ने पहले 8-6 और बाद में 14-12 की मामूली बढ़त बना ली थी, लेकिन भारतीय जोड़ी ने 14-15 के स्कोर के बाद लगातार पांच अंक जीतकर 19-16 से बढ़त बना ली और फिर पहला गेम अपने नाम कर दिया। वहीं दूसरे गेम में भी यही स्थिति रही। एक समय लियो और बगास 14-10 की बढ़त बनाए हुए थे। लेकिन भारतीय जोड़ी ने वापसी करते हुए स्कोर 18-18 से बराबर कर दिया और आखिरी क्षणों में भी संयम बनाए रखते हुए क्वार्टर फाइनल में अपनी जगह पक्की की।

डब्ल्यूडब्ल्यूई लीजेंड हल्क होगन की मौत का कारण आया सामने

नई दिल्ली, (एजेंसी)। 90 के दशक के बच्चों का डब्ल्यूडब्ल्यूई हीरो हल्क होगन का 71 साल की उम्र में निधन हो गया। उन्होंने गुरुवार की सुबह फ्लोरिडा के क्लियरवॉटर स्थिति अपने घर में अंतिम सांस ली। डॉक्टरों ने बताया है कि सुपरस्टार की मौत की वजह कार्डिक अरेस्ट है। साथ ही डॉक्टर खुद हल्क होगन के घर पर आए थे, उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। बता दें कि, कुछ हफ्तों से ऐसी खबरें आ रही थीं कि हल्क होगन बेहोश हो गए थे। लेकिन उनकी पत्नी स्काई ने उन खबरों का ना सिर्फ खंडन किया था बल्कि उन्होंने इसे अफवाह भी बताया था। उस समय तो उनकी पत्नी ने दो टूक भी कहा था कि उनके पिता का दिल काफी मजबूत है और वे अपनी सर्जरी से उबर रहे हैं। हल्क होगन का जाना सिर्फ रेसलिंग की दुनिया के लिए एक बड़ी क्षति नहीं है बल्कि एक पूरी पीढ़ी उन्हें देखते हुए बड़ी हुई है। जिन्होंने अपने टीवी पर होगन को रेसलिंग करते हुए देखा उन्हें कितनी बार वर्ल्ड चैंपियन बनते देखा है। गौरतलब है कि, हल्क होगन का करियर 80 के दशक से सेलिंग की दुनिया में सक्रिया हो चुके थे

मैनचेस्ट में टीम इंडिया का अनोखा रिकॉर्ड, टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में हुआ ऐसा पहली बार

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भारत और इंग्लैंड क्रिकेट टीम के बीच चौथा टीम टेस्ट मैच मैनचेस्टर में खेला जा रहा है। लॉर्ड्स में हार के बाद भारतीय टीम ने 3 बदलाव किए। लगातार बल्ले से संघर्ष कर रहे करुण नायर की छुट्टी हुई। उनकी जगह साई सुदर्शन को मौका दिया गया। इसके अलावा चोटिल तेज गेंदबाज आकाशदीप की जगह अंशुल कंबोज को डेब्यू का मौका मिला। मैनचेस्टर टेस्ट में भारतीय टीम ने अनोखा रिकॉर्ड बनाया। ये भारत के टेस्ट इतिहास में कभी भी नहीं हुआ। वॉशिंगटन सुंदर जैसे ही बल्लेबाजी करने मैदान पर उतरे, ये रिकॉर्ड भी बन गया। दरअसल, सुंदर इस पारी में भारत के लिए पांचवें बाएं हाथ के बल्लेबाज हैं। टेस्ट क्रिकेट के अपने इतिहास में पहली बार भारतीय मेंस क्रिकेट टीम प्लेइंग इलेवन में पांच बाएं हाथ के बल्लेबाजों के साथ टेस्ट मैच खेल रही है।भारत की प्लेइंग 11 में यशस्वी जायसवाल, साई सुदर्शन, ऋषभ पंत, रवींद्र जडेजा और वॉशिंगटन सुंद के रूप में 5 बाएं हाथ के बल्लेबाजखेल रहे हैं। जायसवाल ने 107 गेंदों पर 58 रन की पारी खेली। इस दौरान उन्होंने 10 चौके और 1 छक्का लगाया। 3 नंबर पर उतरे साई सुदर्शन पारी को शतक में तब्दीलनहीं कर पाए। उन्होंने 7 चौकों की बदौलत 151 गेंदों पर 61 रन बनाए।

विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत पहले दिन चोट के कारण रिटायर हर्ट हुए थे। हालांकि, चोट के बावजूद भी वह दूसरे दिन बल्लेबाजी करने उतरे। दूसरे दिन लंच तक पंत 39 रन और सुंदर 20 रन बनाकर नाबाद हैं। रवींद्र जडेजा लगातार 5 अर्धशतक से चूक गए। पहली पारी में उन्होंने 40 गेंदों का सामना किया और 20 रन बनाए।

भारत और पाकिस्तान के बीच होगी टक्कर!

नई दिल्ली, (एजेंसी)। एशिया कप 2025 को लेकर बड़ा अपडेट सामने आया है। दरअसल, ढाका में हुई एशियाई क्रिकेट परिषद की बैठक में बीसीसीआई ने टूर्नामेंट को होस्ट करने की अपनी सहमति दे दी है। ये टूर्नामेंट संयुक्त अरब अमीरात में भारत की मेजबानी में खेला जाएगा।

साथ ही इसका शेड्यूल जारी किए जाने की उम्मीद है। ये लगभग तय हो गया है कि एक बार फिर भारत और पाकिस्तान के बीच रोमांचक मैच देखने को मिलेगा। एसीसी की बैठक में 25 सदस्य देशों ने हिस्सा लिया। बैठक के बाद ये पुष्टि की गई कि बीसीसीआई यूएई में

एशिया कप की मेजबानी करने पर अपनी सहमति दे दी है। बोर्ड का प्रतिनिधित्व करते हुए उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने वर्चुअली बैठक में हिस्सा लिया। भारत के अपने सभी मैच दुबई में खेलने की संभावना है। शेड्यूल पर अभी भी विचार किया जा रहा है। वहीं बता दें कि, इस बार एशिया कप टी20 फॉर्मेट में खेला जाएगा। दरअसल, ये पहले ही तय हो गया था कि एशिया कप उसी फॉर्मेट पर खेला जाएगा। जिस फॉर्मेट पर अगला विश्व कप होना हो। अगले साल यानी 2026 में टी20 वर्ल्ड कप होगा इसी कारण से एशिया कप टी20 फॉर्मेट में खेला जाएगा। साथ ही कहा जा रहा है कि, एशिया कप 2025 का आगाज 5 सितंबर से हो सकता है और 21 सितंबर को फाइनल मुकाबला खेला जाएगा। इसमें भारत और पाकिस्तान के अलावा श्रीलंका, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, यूएई, ओमान और हॉन्गकॉन्ग टूर्नामेंट में हिस्सा लेंगे।

ऋषभ पंत की दमदार पारी, चोटिल होने के बाद भी बना डाले ये 2 कीर्तिमान

नई दिल्ली, (एजेंसी)। मैनचेस्टर टेस्ट के पहले दिन 37 के स्कोर पर रिटायर हर्ट होने भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत चोटिल होने के बाद भी दूसरे दिन बल्लेबाजी करने आए। इस दौरान उन्होंने लड़खड़ाते कदमों से इतिहास रच दिया। चौथे टेस्ट की पहली पारी में पंत ने एक नहीं बल्कि 2 रिकॉर्ड अपने नाम किए। पंत ने वीरेंद्र सहवाग के रिकॉर्ड की बराबरी की और रोहित शर्मा को पीछे छोड़ दिया है। ऋषभ पंत ने पहली पारी में 69 गेंदों पर अर्धशतक लगाया। उन्होंने 72.00 की स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी की और 75 गेंदों पर 54 रन बनाए। अपनी इस पारी में उन्होंने 3 चौके और 2 छक्के लगाए। इसके साथ ही वह टेस्ट में संयुक्त रूप से सबसे ज्यादा सिक्स लगाने वाले भारतीय बल्लेबाज बन गए हैं। उन्होंने वीरेंद्र सहवाग की बराबरी कर ली है। वहीं पंत और सहवाग ने टेस्ट क्रिकेट में 90-90 सिक्स लगाए हैं। इस लिस्ट में तीसरे नंबर पर रोहित शर्मा हैं। रोहित के बल्ले से 88 छक्के निकले थे। साथ ही लिस्ट में चौथे नंबर पर पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी और 5वें ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा मौजूद हैं। पंत चौथे टेस्ट की दूसरी पारी में आराम से वीरेंद्र सहवाग का रिकॉर्ड ध्वस्त कर सकते हैं।

बर्थ डे पर युजवेंद्र चहल का वीडियो वायरल

नई दिल्ली, (एजेंसी)। टीम इंडिया के गेंदबाज युजवेंद्र चहल इन दिनों सिर्फ अपने खेल के कारण नहीं बल्कि अपने निजी जीवन के कारण सुर्खियों में रहते हैं। वहीं इन दिनों सोशल मीडिया पर उनका और उनकी रुमर्ड गर्लफ्रेंड आरजे महवश का वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। जिसमें वह अपना बर्थडे खास तरीके से सेलिब्रेट करते नजर आ रहे हैं। सामने आए वीडियो में सबसे पहले युजवेंद्र चहल, आरजे महवश को गले लगाते हैं और फिर डांस करने लगते हैं। वीडियो देखकर लगता है जैसे युजवेंद्र चहल के जन्मदिन के लिए खास इंतजाम किया गया है। वीडियो में पूर्व क्रिकेटर शिखर धवन भी नजर आ रहे हैं। महवश ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी में चहल की अनदेखी तस्वीर पोस्ट की, जिसमें वो एक रेस्टोरेंज में बैठे नजर आ रहे हैं। फोटो शेयर करते हुए महवश ने मजाकिया अंदाज में लिखा कि, जन्मदिन मुबारक हो युजी। उम्र बढ़ना जीवन का एक हिस्सा है और जिंदगी के दूसरे हिस्से इससे भी ज्यादा खराब हैं। इसलिए शुभकामनाएं। वहीं युजवेंद्र चहल ने हाल ही में पंत और अभिषेक शर्मा के साथ नेटफ्लिक्स के शो द ग्रेट इंडियन कपिल शो में नजर आए थे। इस दौरान कृष्णा अभिषेक लड़की बनकर आते हैं और युजवेंद्र की जमकर खिंचाई करते हैं। आरजे महवश के नाम पर जब चहल से सवाल पूछा जाता है तो वह कहते हैं कि पूरी इंडिया उनके रिलेशनशिप स्टेटस को जान चुकी है।

बेन स्टोक्स ने तोड़ डाला अपना ही रिकॉर्ड, पहली बार टेस्ट सीरीज में डाले 119 ओवर

नई दिल्ली, (एजेंसी)। इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स का भारत के खिलाफ जारी टेस्ट सीरीज में प्रदर्शन बेहतरीन रहा है। चारों टेस्ट मैच में वह बल्ले से ज्यादा कमाल नहीं दिखा सके लेकिन गेंद से उन्होंने भारतीय बल्लेबाजों को परेशान किया है। बेन स्टोक्स ने बुधवार को भारत के खिलाफ चौथे टेस्ट मैच के दौरान अपना एक पुराना रिकॉर्ड तोड़ दिया है। इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने एक टेस्ट सीरीज के दौरान खुद द्वारा फेंके गए सबसे ज्यादा ओवरों का अपना ही रिकॉर्ड तोड़ डाला। मैनचेस्टर में खेले जा रहे मुकाबले में बेन स्टोक्स ने पहले दिन 14 ओवर में 47 रन देकर दो विकेट अपने नाम किए। इंग्लैंड के स्टार ऑलराउंडर बेन स्टोक्स ने भारत के खिलाफ जारी सीरीज में भारतीय टीम के ज्यादातर उन बल्लेबाजों को अपना शिकार बनाया जो मैच का रुख बदलने में महारथी हैं। उन्होंने मैच के दौरान ज्यादा विकेट नहीं झटके लेकिन उन खिलाड़ियों को पवेलियन जरूर भेजा जो उनकी टीम के लिए खतरा बन सकते हैं। बेन स्टोक्स ने चौथे मैच में पांच ओवर के स्पेल के साथ शुरुआत की। इसके बाद चार और

फिर दिन का अंत पांच ओवर के साथ की। बेन स्टोक्स बल्ले से ज्यादा रन नहीं बना सके हैं।

उन्होंने अभी तक 6 पारियों में 27.16 के औसत से 163 रन बनाए हैं। उनका बेस्ट स्कोर 44 का रहा है। बेन स्टोक्स इंग्लैंड के लिए जारी सीजन में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं। उन्होंने 13 विकेट लिए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 66 रन देकर 4 विकेट है। बेन स्टोक्स ने अब तक कुल 119 ओवर गेंदबाजी की है, एक टेस्ट सीरीज के दौरान ये उनके द्वारा डाले गए सबसे ज्यादा ओर हैं।

चीनी खिलाड़ी को हराकर दिव्या देशमुख फिडे महिला वर्ल्ड कप के फाइनल में

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भारत की स्टार शतरंज खिलाड़ी दिव्या देशमुख ने फिडे महिला वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल के दूसरे गेम में चीनी झोंगयी टैन को मात दी। इसके साथ ही उन्होंने इस मिनी मैच 1.5- 0.5 से जीतकर फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली है। इस प्रक्रिया में दिव्या कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में भी जगह बनाने वाली पहली भारतीय बन गईं। महिला कैंडिडेट्स शतरंज टूर्नामेंट अगले साल होना है और उस टूर्नामेंट से मौजूदा महिला वर्ल्ड चैंपियन वेनजुन जू के प्रतिद्वंद्वी का फैसला होगा। बता दें कि, दिव्या पहली बार वर्ल्ड कप में हिस्सा ले रही हैं। चीन की दूसरी वरीयता प्राप्त जोनर झू तत्कालीन हमवतन ग्रैंडमास्टर डी हरिका को क्वार्टर फाइनल में हराने के बाद दिव्या ने इस प्रतियोगिता में अपना दबदबा बनाए रखा और टैन के खिलाफ 101 चाल में जीत उनके बढ़ते शतरंज कौशल का प्रमाण था। दूसरे सेमीफाइनल में कोनेरू हम्पी ने 75 चाल में चीन की टॉप वरीयता प्राप्त टिंगजी लेई के साथ ड्रॉ खेला। हम्पी अब छोटे प्रारूप में लेई के खिलाफ टाई-ब्रेकर खेलेंगी। बता दें कि, 9 दिसंबर 2005 में नागपुर में जन्मीं दिव्या ने पांच साल की उम्र से शतरंज

खेलना शुरू कर दिया था। दिव्या के माता-पिता डॉक्टर हैं उनके पिता का नाम जितेंद्र और माता का नाम नम्रता है। दिव्या ने 2012 में सात साल की उम्र में अंडर-7 नेशनल चैंपियनशिप जीती। इसके बाद उन्होंने अंडर-10 और अंडर-12 कैटेगरी में विश्व युवा खिताब अपने नाम किया। इसके बाद 2014 में डरबन में आयोजित अंडर-10 वर्ल्ड यूथ टाइटल और 2017 में ब्राजील में अंडर-12 कैटेगरी में भी खिताब अपने नाम किए। उनकी निरंतर प्रगति ने उन्हें 2021 में महिला ग्रैंडमास्टर बना दिया और इसके साथ ही वह विदर्भ की पहली और देश की 22वीं महिला खिलाड़ी बनीं जिन्होंने ये उपलब्धि हासिल की।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।